मुल्य रु. ५-००   सलंग अंक ७७ सितम्बर-२०१३

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख

श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों के सानिध्य में शिकागो मंदिर का १५ वाँ पाटोत्सव तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. श्रीराजा के सानिध्य में सत्संग शिबिर

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

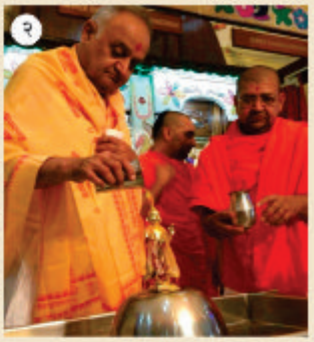

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर फ्लोरिडा में शिखर पर सुवर्ण कलश विधि करते हुए तथा मंदिर में अननकूट की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री । (३) स्ट्रेधाम (आई.एस.एस.ओ.) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । (३) श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।(४) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में जन्माष्टमी को मंदिर के चौक में कीर्तन-भक्ति का कार्यक्रम तथा रात्रि में १२ बजे जन्मोत्सव आरती दर्शन ।(५) श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पू. श्रीराजा अपने जन्मोत्सव प्रसंग पर केक काटती हुई तथा बहनों को दर्शन देती हुई ।(६) शिकागो के सत्संग शिबिर में युवानो को प्रेरणा देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा बालिकाओं को आशीर्वाद देती हुई श्रीराजा तथा शिबिर में लाभ लेती शिबिरार्थिनी बहने ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ७ ● अंक : ७७
सितम्बर-२०१३

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०६
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०७
०३.	हमें पूजारी की जरुरत है	०६
०४.	आर्थिक उन्नति का अमोधउपाय	०८
०५.	संस्कृत के प्रकांड पंडित दीनानाथ भट्ट	११
०६.	श्रीहरि की भक्ति का उत्सव	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०८.	सत्संग बालवाटिका	१६
०९.	भक्ति सुधा	१७
१०.	सत्संग समाचार	२१

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

सर्वोपरि भगवान श्रीहरिने हम सभी के कल्याण तथा मोक्ष के लिये सर्वविधउपाय किया है । अपनी उपस्थिति में ही नवमहामंदिरो का निर्माण कराकर अपने स्वरुपोकी स्थापना की थी । नंद संतो से सद्शास्त्रों की रचना करवाये । शिक्षापत्री, वचनामृत (२७३), सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण इत्यादि शास्त्र तथा अपने ही कुल में से धर्मवंशी आचार्य की स्थापना करके अपने स्थान पर सत्संगी मात्र के लिये गुरु को प्रतिष्ठित किया । पांचसौ परमहंसो को भागवती दीक्षा देकर उनके नीति-रीति के बल से अनेक मुमुक्षुओं का कल्याण किया । इस तरह हम सभी के लिये तैयार पक्वान के साथ थाली मिल गयी है । नंद संत खूब परिश्रम करके, महाराज की अक्षरशः आज्ञा का पालन करके, गरीब-अमीर में भेद विना किये अनेक मुमुक्षुओं को हरिके सन्मुख किया । संत हम सभी के लिये खूब पुरुषार्थ किये हैं । वर्तमान में श्री नरनारायणदेव गादी के अपने प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री एवं संत हम सभी के लिये रात दिन पुरुषार्थ कर रहे हैं । वर्तमान में तीन-चार महीने से अमेरिका, इंग्लेन्ड, केनेडा में सत्संग विचरण, अमेरिका में बायरन, वोशिंग्टन डी.सी., न्युयोर्क में पारसी पेनी में नूतन भव्य महामंदिरो का निर्माण कराकर मूर्ति प्रतिष्ठा, लंडन के विल्सडन लेन मंदिर, वुलवीच, इष्ट लंडन तथा बोल्टन एवं केनेडा मंदिर पाटोत्सव इत्यादि मंदिरो के उत्सव में समग्र धर्मकुल उपस्थित रहकर हरिभक्तों को सुख प्रदान किया है । वर्तमान में प.पू. आचार्य महाराजश्री गादी पद पर आरुढ होने के समय से आजतक समग्र जीवन सत्संग के लिये समर्पित कर दिये हैं । जिस तरह प.पू. बड़े महाराजश्री सतत ३५ वर्ष तक गादी पर विराजमान होकर अविरत सुख प्रदान किये उसी तरह वर्तमान गादी पति प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा हम सभी के प्यारे प.पू. लालजी महाराजश्री भी सत्संग को सुख प्रदान कर रहे हैं । इस तरह पूरा धर्मकुल सत्संग के लिये जीवन समर्पित कर दिया है ।

परमकृपालु परमात्मा श्री नरनारायणदेव को प्रार्थना करते हैं कि हम सभी की तथा आनेवाली पीढियों को श्रीहरि के अपर स्वरुपों द्वारा तथा बहनों को प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री द्वारा सत्संग को पोषण तथा आशीर्वाद मिलता रहे ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (ओगस्ट-२०१३)

७-८ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजार (कच्छ) के खात मुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण ।
११ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापुनगर पदार्पण ।
१६-१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) पदार्पण ।
१८ प.भ. जेठाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण ।
प.भ. किशोरभाई झवेरभाई के यहाँ पदार्पण, नवा निकोल गाँव ।
१९-८-१३ से ता. ९-९-१३ तक विदेश यात्रा
श्री स्वामिनारायण मंदिर वुलवीच (यु.के.) २५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर, वहाँ से श्री स्वामिनारायण मंदिर फ्लोरिडा शिखर कलश महोत्सव, श्री स्वामिनारायण मंदिर वोशिंग्टन डीसी, मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव तथा केनेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर के ५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर तथा सत्संग अभ्युदय हेतु विचरण

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (ओगस्ट-२०१३)

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम पदयात्रा द्वारा दर्शन ।
२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली जन्माष्टमी के उत्सव पर पदार्पण ।

हमें पूजारी की जरूरत है

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

आत्यन्तिक कल्याण करके अक्षरधाम में जाने की वात तो हम सभी कंठकर लिये हैं । अक्षरधाम तक पहुंचना है कहीं बीच में रुकना नहीं है। अन्य किसी धाम में या किसी देवलोक में ब्रह्मा, भव जैसे ईश्वर भी नहीं बनना है । अक्षरधाम के सिवाय कहीं नही जाना है । लेकिन अक्षरधाम में जाकर क्या करना है, इसको अच्छी तरह जान लेना चाहिए । शि.प. श्लोक १२१, वच. अश्लाली १, ग.अं. २२-२३ में स्पष्ट रुप में श्रीजी महाराज उत्तम भक्त के लक्षण बताये है।

अक्षरधाम में ब्रह्मरुप होकर भगवान की सेवा करनी है । इस लोक में सत्संग में रहकर भगवान में प्रत्यक्षपना के भाव के साथ सेवा करनी चाहिए। प्रत्यक्ष सेवा तथा मानसी सेवा दोनो उत्तम है। उत्तम तथा मध्यम में भेद नहीं है। दोने का फल समान है। प्रेमार्द्र होकर गद् गद् भाव से सेवा करनी चाहिए । यही उत्तम सेवा है । भगवान की अंगभूत सेवा करना ही मुक्ति है। अक्षरधाम के जो भक्त वे जैसी इच्छा होती है वैसी सेवा भगवान स्वीकार करते हैं। मुक्त अनंत है। श्रीजी महाराज एक हैं। परंतु भक्तों को लगता है कि भगवान मेरी तो सेवा स्वीकार करते है।

पुजारी बनकर मुक्त लोग भगवान की सेवा करते है। इसलिये अक्षरधाम में जैसी सेवा करने के लिये यहाँ पर सेवा की ट्रेनिंग लेना ही पडेगा।

इसलिये अपनी पूजा तथा घर-मंदिर की सेवा भाव पूर्वक करनी चाहिए। अक्षरधाम की नेट प्रेक्टिस करने के लिये यहाँ पर भगवान की प्रत्यक्ष सेवा करनी चाहिए। हरिभक्त चाहे जितना बड़ा अधिकारी क्यों न हो, प्रतिष्ठित हो, अग्रगण्य हो, एकांतिक हो, जगत का नानाविधउत्तर दायित्व भले हो तथापि पुजारी बनकर सेवा पूजा तो करनी ही पडेगी प्रत्यक्ष सेवा में रुचि न हो तो भगवान उसके लिये अक्षरधाम में सेवा का अवसर नहीं देंगे।

कितने लोग जप, तप, व्रत, दान, पुण्य, ध्यान और सत्कर्म में मन लगाते है । इन सभी साधनो से भगवान बहुत प्रसन्न होते है। परंतु आथ्यंतिक मुक्ति तो भगवान की सेवा में ही है। भगवान को नाना प्रकार से प्रेमार्द्र होकर सेवा करनी चाहिए। ग.अं. २३ में ऋतु के अनुसार मानसिक पूजा करने की आज्ञी की गई है । भगवान की मानसी पूजा नित्य करनी चाहिए। ऐसी वात हमने कभी नहीं की है, इस तरह महाराजने कहा है।

मानसी पूजा के लिये हृदयाकाश में अक्षरधाम की कल्पना करनी चाहिए । करोडो सूर्य के सफेद तेज से मुक्तो से घिरे हुए सिंहासन पर विराजमान श्रीजी महाराज है। आप जिस तरह अपने घर में या रुम में रहते हो, उसमें जितनी सामान जहाँ जिस रुप में है वह बाहर जाने के बाद भी जब ध्यान करते है तो वैसा का पैसा ही हृदयाकाश में दिखाई देने लगता है। इसी तरह हृदयाकाश में प्रभु को जिस तरह बाहर प्रत्यक्ष पूजन-अर्चन किये है वैसा ही करना चाहिए । अन्तर हृदय में अक्षरधाम की कल्पना करके बाह्य सेवा की यथार्थता को धीरे-धीरे उतारनी चाहिए । हृदयाकाश ही अक्षरधाम में जहाँ पर महाराज और हम विराजमान है । वहाँ पर महाराज की जैसी ईच्छा हो वैसी मानसीपूजा में लेनी

चाहिए । यदि मानसी पूजा में वृत्ति बाहर जाये तो पुन: अन्तर में वापस लानी चाहिए । जब-जब बाहर जाये तबतब अन्तर में वापस लानी चाहिए । वहीं पर मुक्तों के मंडल में कथा-कीर्तन भजन-भक्ति-सभा में लगजाना चाहिए । अपने हृदय में आत्मा का वास है । आत्मा में भगवान का वास है । इसलिये ध्यान-धारणा के अभ्याससे प्रभु का साक्षात्कार हो जायेगा । इस तरह करने से सुख शान्ति मिलने लगेगी । भगवान को जगाना चाहिए स्नान कराना चाहिए । वस्त्र पहनाना चाहिए, हार धारण कराना चाहिए । वारंवार भेटना चाहिए, मुख में मुखवास देना चाहिए, मन चंचल हो तो उसे शांत करने के लिये बीच-बीच में प्राणायाम करना चाहिए । हृदयाकाश में अधिक समय तक मन लगा रहे ऐसी उपाय करते रहना चाहिए । वहीं पर भगवान की मूर्ति को धारण करना चाहिए । परिचित स्थान में आनंद मिलता है इसी तरह हृदयाकाश में परिचित स्वरुप का आनंद लेना चाहिए । इससे महाराज इच्छापूर्ण करने में विलम्ब नहीं करते । अपने सत्संग में सत्संगियो की मानसीपूजा में भेद दिखाई देता है । लेकिन किसी अच्छे संत के पास जाकर इसका अभ्यास करने से परम्परा के अनुसार ध्यान धारण करने से सर्वोत्तम, सफल मानसी पूजा कही जायेगी । वृत्ति तो पशु की तरह है । जैसी ट्रेनिंग दी जायेगी वैसा वह वर्तन करेगा । इसी तरह सेवा करने वाले की अन्तर की इन्द्रियो भगवान की सेवा में लगजाती है । गढड़ा मध्य प्रकरण १२ वें में श्रीजी महाराजने अपना बहाना लेकर सभी से कहा कि हमारे हृदयाकाश में ऐसा वर्तन हो रहा है, आप लोग भी अन्तर में भगवान की मूर्ति को धारण कीजिये । ''मारी इन्द्रियो नी वृत्ति छे ते पाछी पानी ने सदा हृदय ने विषे जे आकाश छे तेने विषे वर्ते छे अने ते हृदयाकाश ने विषे अतिशे तेज देखाय छे । जेम चोमासाने विषे आकाश मां बादला छाई रह्यां होय तेम मारा हृदय ने विषे एकलुं व्यापी रह्युं छे । अने ते तेज ने विषे एक भवान नी मूर्ति देखाय छे ते अति प्रकाशमय छे । अने ते मूर्ति घनश्याम छे । तो पण अतिशय तेजे करीने श्वेत जणाय छे । अने ते द्विभुज छे । अने ते मूर्तिने बे चरण छे अने अतिशय मनोहर छे पण चार भुज के अष्टभुज के सहस्त्रभुज ते ए मूर्ति नथी ए मूर्ति तो अति सौम्य छे अने मनुष्य जेवी आकृति छे ने किशोर छे ।'' ग.म. १३ (अमदावाद रंगमहोल के घनश्याम महाराज)

इसके अलावां वचनामृत अश्लाली-१ में श्रीजी महाराज ने कहा कि ''भगवान ने जे भक्त तेमणे भगवान नी सेवा विना बीजी इच्छा राखवी नहीं ।'' प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान की निरन्तर अनन्य भाव से सेवा करके एक निष्ठ होने वाले को उत्तम कहा है । शिक्षापत्री श्लोक-१२१ में कहा है कि आत्मा में ब्रह्मरुप की भावना करके भगवान की सेवा करनी चाहिए यह मुक्ति उत्तम मानी गयी है ।'' एकांतिक भक्त चार प्रकार की मुक्ति की भी ईच्छा नही रखते । केवल ब्रह्मरुप में सेवा करना श्रेष्ठ मुक्ति है ।

ग.अन्त्य-२२ में बोल्यां के देह मूकीने भगवान ना धाममां जाय छे त्यारे जेवी भगवाननी मरजी होय तेवो तेनो आकार बंधाय छे अथवा ते भक्त ने जेनी सेवा नो अवकाश (ईच्छा) होय तेवो आकार धरी ने भगवाननी सेवा धरे छे. वाणी ग.प्र. २० मां कह्युं छे के - जे भगवानना प्रताप ने विचारी ने अन्त दृष्टि करे छे ते तो पोताना स्वरुप ने उज्जवल प्रकाशमान जुए छे ।

वळी गढडा २१ मां कह्युं छे के अक्षरना बे स्वरुपो छे । एक तो निराकार (आत्मा) चिदाकाश ब्रह्म महोल अने बीजे रुपे करीने पुरुषोत्तम नारायणनी सेवामां रहे छे ।'' अर्थात् हृदयाकाश आत्मा में भगवान को धारण करके दूसरे स्वरुप में भगवान को नाना प्रकार से प्रेम करना, भोजन कराना, शयन कराना स्नान कराना इत्यादि रुप से भगवान की हृदयाकाश में भावना करनी चाहिए । हृदयाकाश में अक्षरधाम की कल्पना करके सेवा करनी चाहिए ।

सत्संग में दूसरा कुछ नहीं आता हो तो चलेगा लेकिन पूजा करने तो आना ही चाहिए । इसलिये पुजारी बनो अवश्य बनो । कोठारी को भी पुजारी तो बनना ही पडेगा ।

आर्थिक उन्नति का अमोधउपाय

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद)

उद्धवातार तथा समर्थ गुरुवर्य स.गु. श्री रामानंद स्वामीने जब नीलकंठ वर्णी को पृथ्वी सौंपी तब उन्होंने वर्णी को वरदान मांगने को कहा,

त्यारे स्वामी कहे हुं छुं प्रसन्न रे,
मांगो मुज पासेथी वचन रे ।
एवी ब्रह्मांडे वस्तु न कांय रे,
जे मांगो ने अमे न अपाय रे ॥१७॥

अपने गुरु की ऐसी सामर्थी तथा प्रबळ ईच्छा जानकर वर्णीने मांगा कि,

वली हरिजनने होय दुःख रे,
थाय मने ए भोगवे सुख रे ।
कृष्ण भक्त जो पूर्वे ने कर्मे रे,
अन्न वस्त्र पामे परिश्रमे रे ।
एनुं कष्ट आवे मुजमांय रे,
एह सुखमां रहे सदाय रे ॥२०॥

(भ.चि.प्र. ४७)

यही बात ग.प्र. ७० में वचनामृत में भी श्रीहरिने स्वंय कही है । श्रीहरिने स्वयं इस सत्संग के प्रति आत्मबुद्धि रखकर अपने आश्रितों का इस लोक तथा परलोक में हित हो ऐसा कहा । इस जीव को भोजन सिवाय भजन नहीं हो पाता । इसलिये श्रीहरिने शि.स्लो. ६५ में आज्ञा की है कि, जिसकी जैसी शक्ति हो उसी प्रकार उद्यम करना चाहिए । उद्यय किये बिना और हक्क का न होतो खाना ठीक नही है । योग्य उद्यम प्रतिदिन करने की आज्ञा की गयी है । उद्यय किये बिना बैठे-बैठे खाने की आदत हो तो शरीर और मन दोनो ही रोगिष्ट हो जाते है.

इस संप्रदाय में तो निवृत्ति मार्ग को ग्रहण करके बैठे संत भी नित्य ठाकुरजी का भोग लगाकर निश्चित पाठ-माला करते ही है । इसी कारण हमने उनका अन्न स्वीकार्य किया है । स्वयं इस वेद से यदि अन्न स्वीकार्य करने पर भी उसका ऋण भी नही रहता । किसी का भी ऋण नही करना चाहिए तथा इन संतो की प्रवृत्ति से ही समझमें आता है ।

इस लोक में व्यवहार के हेतु धन की अनिवार्यता अनादिकाल से ही स्वीकार्य है । धन के विना धर्म कार्य असंभव है । सच्चिदानंद स्वामी जैसे समर्थ संत को द्वारका के ब्राह्मणो ने तप्तमुद्रा नहीं दिये । जिससे श्रीकृष्ण का दर्शन नही हुआ । जो संत श्रीकृष्ण को साक्षात् द्वारका से वडताल लाये, ऐसे संत की ऐसी स्थिति तो सामान्य व्यक्ति की क्या वात । इसी सन्दर्भ में आचार्यश्री विहारीलालजी हरिलीलामृत में लिखे हैं कि -

लक्ष्मी विना जगत में जन होय ज्यारे,
बोलावशे मुखकी जन सौ तुंकारे ।
जे कानुडो व्रज विषे महि चोरी रवाय,
लक्ष्मी मायाथकी थया रणछोडराय ॥

हमारे सत्संगी इस जगत में निर्धन न रहे इसके लिये श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री १४७ वें श्लोक में आज्ञा की है । प्रथम यथाशक्ति - यथायोग्य उद्यम करना उसमें से दान करना चाहिए । जो व्यक्ति धर्मवंशी आचार्य से दीक्षा लेकर शिक्षापत्री के अनुसार वर्तन करता है तथा दशांश या वीशांश भाग जिस देश में रहते हों उस देश में दान करते रहेंगे तो कभी दुःखी नहीं होगे । ऐसा श्रीहरिने अभय वरदान दिया है । अपनी कमाई में से दान करने का मात्र एक ही प्रयोजन था कि मंदिर का पोषण हो इसके अलांवा उस जीव का विशेष रुप से कल्याण हो । इस आज्ञा के अनुसन्धान में सभी हरिभक्तों को ध्यान रखना चाहिए ।

(१) हम अपना उद्यम कमाने के लिये नही अपितु दान करने के लिये करते है ऐसी भावना रखनी चाहिए । देव के लिये किया गया दान शुद्धि तो करता ही है कार्य सिद्धि भी करता है ।

(२) अमृत वर्षा नामक पुस्तक के पृष्ठ संख्या ८६ में अ.मु. ईश्वरलाल पंड्या ने सुंदर लिखा है - ''हम जो नौकरी कहते हैं वह परात्पर परमात्मा की करते हैं । इसलिये प्रामाणिकता के साथ नौकरी करनी चाहिए,

जिससे वेतन मिलने पर उसे प्रभु का प्रसाद मानकर स्वीकार करना चाहिये। उसी में से १०-२० प्रतिशत दान भी देने का विधान है।

(३) व्यापार में भी जो आवक हो रही है उसमें से १०-२० प्रतिशत देव द्रव्य समझकर देव को अर्पण करने से दोष भागी नहीं होंगे और धन शुद्दि होती रहेगी। हमारे व्यापार के मालिक तो स्वयं श्रीहरि है। हम मात्र रख रखाव करने वाले हैं। ऐसा विचार करने से अनीति का पैसा नहीं आयेगा और बहुत पड़े प्रायश्चित से रक्षा होती है।

(४) किसान वर्य भी फसल पकने के बाद प्रथम प्रभु को अर्पण करें। अन्यथा दोषी होगा और नाना प्रकार से ईस्वरी आपदायें आनेलगेगी। यह भाव रखखर प्रभु को अर्पण करना चाहिए कि हे प्रभु मैं अकेले यह खेती का रक्षण नहीं कर सकता था, आपके रक्षण से यह अन्न प्राप्त हुआ है, इसमें से सर्वप्रथम १०-२० प्रतिशत मैं आपको अर्पण करके ही अवशिष्ट घर लेजाऊँगा।

"अन्नजल ने वस्त्र जेह,
तेणे करी रहे छे आ देह।
तेना आपनारा चे अविनाश,
एम समझे छे हरिना दास॥
(भ.चि.प्र. १०७ कडी ३४)

(५) परमात्मा ने यह रमणीय सृजन किया है मात्र जीव के कल्याण के लिये। जिस में पवन, बरसात, धूप, पृथ्वी इत्यादि को विना किसी चार्ज के व्यवहार में हम लेते हैं। इस जीव को दश इन्द्रियों तथा रमणीय सृष्टि दिया है। हम उन सभी का यथार्थ उपयोग करके आत्मकल्याण करना चाहिए, उसके बदले में प्रभु को १०-२० प्रतिशत देव को भाग अर्पण करना चाहिए। जिस तरह किसी की वस्तु का हम उपयोग करते है तो उसके बदले में उसे कुछ अवश्य देते हैं, ठीक उसी तरह फूल नही तो फूल की पंखडी, प्रभु के चरण में दान धर्मादा के रुप में अर्पण करना चाहिए।

(६) हम श्रीहरि को धन-अन्न इत्यादि का दान-धर्मादा नही करते वह इसलिये कि उस जीव का कहाँ कुछ है ही नहीं। यह सब कुछ मेरा है - यह मात्र भ्रम ही है। किसी कवि ने लिखा है कि, तारुं कशुंज नथी, सर्वे छोडीने आळीजा अहीं (प्रभुपास) ने जो बधुंज तारुं छे तो छोड़ी बतावु ने तुं।'' स.गु. देवानंद स्वामी ने भी कीर्तन में लिखा है कि -

''मारुं मारुं करी ने धन मेळव्युं रे, तेमां तारुं नहि तलभारी।''

अपना तो कुछ भी नहीं है। जो कुछ है वह श्रीहरि का है उन्हीं को अर्पण करदेना है। उनके चरण में अर्पण करके हमे पुण्यशाळी बनना है। यह भाव जब तक नहीं आयेगा तबहाथ से निकलना बडा कठिन है, फिर परिणाम अधोगति का ही होगा। चौराशी लाख योनियों में यह व्यवस्था कहाँ है जो धंधा-व्यापार, नौकरी इत्यादि करके धनार्जन करना होता है, मात्र मनुष्य शरीर ही ऐसी है कि सबकुछ उद्यम संभव है अतः उद्यम करके जो भी प्राप्त करे उसमें से १०-२० भाग प्रभु के चरण में लाकर भेंट देनी चाहिये। उदाहरण के रुप में गढडा दादा खाचर के दरबार में नींब वृक्ष, माणकी घोडी, गरुणजी तो सभी मुक्त है, वे सभी महाराज की मात्र सेवा करते है, जब कि हम सेवा भी कर सकते है और दान भी दे सकते है।

(७) शिक्षापत्री १४७ वें श्लोक में श्रीहरिने लिखा है कि अपनी आवक में १०-२० प्रतिशत भाग प्रभु को अर्पण करना चाहिए। उमरेठ के विप्रवर्य श्रीनाथजीभाई शुक्ल अनेकों वार कहते हि श्रीजी ने इस श्लोक में नीति-रीति बताकर हमें व्यवहार में सक्षम बना दिया है।

श्रीजी महाराज की आज्ञा मानकर जो भी २० वां भाग दान करेगा वह भी तथा उसे भी अधिक १० वाँ भाग दान करने वाले को उसी अनुपात में प्रभु. उसे अधिक वापस भी देंगे। भगवान किसी से मांगते नही, सभी को देने के लिये बैठे है। शुद्ध मन से कण भरका दान भी मन भरका हो जाता है। मंदिर केगल्ले में या भंडार में अर्पण किया गया धन भंडार भरने वाला होगा। भगवान के चरण में जब कोई भेंट रखता है तो लक्ष्मीमाता उस पर खूब प्रसन्न होती है। उसे धन से परिपूर्ण करती है।

(८) ग.म. १६ वें वचनामृत में श्रीजी महाराज कहते हैं कि मेरे भक्तों का किसी भी काल में खंडन मत करना । काल, कर्म, माया भी श्रीजी महाराज के वचनानुसार वर्तन करती है । वह इसलिये कि श्रीजी महाराज भक्तों का धर्मादा स्वीकार करते हैं । उसके बदले में अनेक गुना वापस देते हैं। भगवान हमें देते है हम उन्हें अर्पण नही करें तो अधर्म वृत्ति कही जायेगी । भगवान दे फिर उन्हें अर्पण करे तो मध्यम, भगवान के देने से पूर्व उन्हें अर्पण करें तो उत्तम वृत्ति कही जायेगी।

(९) शिक्षापत्री श्लोक १६७ में दान प्रधान वृत्ति को उद्‌भासित किया गया है। मात्र दान करने से कल्याण नहीं होता । यह संप्रदाय वर्तन के आधार पर है । धर्माचरण आत्यंतिक कल्याण करने वाला है। श्रीहरिने कहा है कि - विधवा स्त्रियों के पास धन यदि निर्वाह करने भरको हो तो वे दान न करें। कल्याण खरीदा नही जा सकता। निष्कुळानंद स्वामीने लिखा है कि -

द्रव्य राखवुं निर्वाहकाज,
नहि तो न रहे आपणी लाज ।
अन्न वस्त्र ते अंगने जोये,
आयेजरावा तो धर्म खोये ॥

यह संप्रदाय मात्र लाओ-लाओ वाला नहीं है वल्कि धर्म प्रधान प्रवृत्ति वाला है। शतानंद मुनिने लिखा है कि - जो लोग यत्र-तत्र से धन लाकर कर्ज लेकर धर्म करते हैं वे ज्ञानी होते हुए भी वे दुःखी होते हैं। इसलिये दान भेंट तो अपनी कमाई में से करनी चाहिए.

(१०) दान धर्मादा करने से जीव की लोभ वृत्ति छूटती है। व्यवहार में धन प्राप्ति के समय यदि कोई दोष लग गया हो तो उसका निराकरण हो जाता है। भाव ऐसा रखना चाहिये हम जो भी प्रवृत्ति करते हैं वह कमाने के लिये नहीं बल्कि दान धर्म करने के लिये करते हैं । भगवान श्रीकृष्ण को यदि अर्पण किये विना व्यवहार में लेते है तो कृतध्नी कह यागेगे।

(११) धर्मादा करते समय विवेक बुद्धि रखनी चाहिए । यत्र-तत्र दान करने से कृष्णार्पण नही कहा जायेगा । अहमदाबाद - श्री नरनारायणदेव तथा वडताल श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश की गादी स्थान में देव धर्मादा करने का विधान है। अथवा उस देश के मंदिर में देव धर्मादा किया जा सकता है जहाँ से उन मूल गादी संस्तान को पहुंचने वाला हो । श्रीजी महाराजकी आज्ञा से विपरीत स्थान पर किया गया दान धर्मादा दान के योग्य नहीं माना जायेगा।

● धर्मवंशी आचार्यश्री जिन्हे दान धर्मादा लेने की आज्ञा किये हों उन्हें ही दान धर्मादा देनी चाहिये, अन्य को नहीं।

● जिस तरह की कमाई हो उस तरह का भाग देना चाहिये। एक साथ देने का विधान नहीं है।

● धर्मादा करने के बाद उसका प्रसाद नहीं लेना चाहिए, वही पवित्र दान समझा जायेगा।

● धर्मादा कोई मांगने आये उसकी राह देखे बिना, मंदिर में स्वयं ही धर्मादा देना चाहिए।

● संतो को रसोई देना, धोती ओढाना, शास्त्र प्रकाशन, मंदिर निर्माम इत्यादिक शुभ काम भी धर्मादा की रकम में से नही करना चाहिए धर्मादा निकाल कर बाकी सभी काम जरुर करना चाहिए। अन्य शुभ कार्यो को कभी धर्मादा के विकल्प के रुप में तो नही ही करना चाहिए।

● धर्मादा निकालने के बाद उसके उपयोग के हेतु अनावरण सलाह-सूचन या टीका-टिप्पणी नहीं करना चाहिए। हमें देव को मालिक मानना चाहिए और उस देव को सलाह सूचन भी कोई आवश्यकता ही नही है । धर्मवंशी आचार्यश्री भगवान के पुत्र है। देव की जो ईच्छा होती है उसी के अनुसार धर्मवंशी आचार्यश्री के द्वारा होती हैं।

● मंदिर के कार्य कर्ताओने श्रीहरि की तरफ से हरिभक्तों का धर्मादा स्वीकार्य करके, हरिभक्तों का व्यवहार उत्तरोत्तर अच्छा हो ऐसे आशीर्वाद प्रदान करने चाहिए श्रीहरि वरताल के २० वे वचनामृत में कहते है कि जिसकी समज बड़ी है वह हरिभक्त बड़ा है । इसीलिए मंदिर में जो अधिक धर्मादा दे वह हरिभक्त बड़ा है ऐसी भावना बिलकुल भी नहीं है। हरिभक्त व्यवहार से यदि दुर्बल हो लेकिन आज्ञा पालन में अधिक सक्षम हो वही

पेईज नं. १३

संस्कृत के प्रकांड पंडित दीनानाथ भट्ट

- प्रो. महादेव धोरियणी (राजकोट)

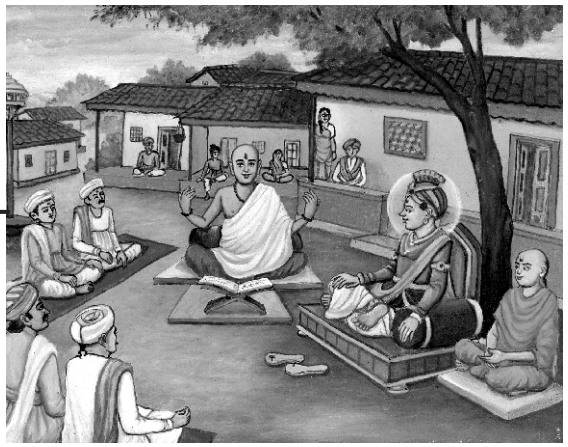

स.गु. आधारानंद स्वामीने लिखा है कि -

''हरि के चरित्र हरसम जाना,
यह दोनो में भिन्न न माना । ''

मानव जाति के सच्चा आध्यात्मिक तथा सामाजिक उत्कर्ष के लिये श्री सहजानंद स्वामीने जीवन को सतत ऊर्ध्व बनाकर आत्यंतिक कल्याण हो तथा दिव्य सुख की प्राप्ति हो ऐसा सर्व समन्वयी ज्ञान मार्ग प्रस्थापित किया है । ''वचनामृत, तथा शिक्षापत्री में तत्वज्ञान की गहवरता है वह अनोखी है।''

इसके बाद सहजानंद स्वामीने विचरण करके सभी को उपदेश दिया है वह भी अनन्य है। एकबार श्री दीनानाथ भट्ट महाराज को मिलने आये । उन प्रकाडं पंडित को १८ हजार श्लोक कंठ थे । प्रकांड पंडित की पंडितायी के आगे सभी लोहा मानते थे । उनके साथ शास्त्रार्थ करने या वादविवाद करने के लिये कोई नहीं आता था।

एसे प्रकांड पंडितजी का श्रीजी महाराज ने खूब स्वागत किया। बाद में उनसे कहे कि शास्त्री जी आप तो संस्कृत के बड़े विद्वान है । आपकी विद्वता की सर्वत्र प्रशंसा होती है। आप की यादशक्ति भी अजोड है। आप से एक प्रश्न पूछुं -

महाराज ! पूछिये, दीनानाथ को हो गया कि महाराज उनकी परीक्षा करना चाहते है।

श्रीजी महाराजने पूछा कि - आप को कितने श्लोक कंठ है?

पंडित दिनानाथ ने उत्तर दिया कि पूरे अड्डारह हजार कहिये तो पूरा सुना दूं।

श्री सहजानंद स्वामीने प्रश्न किया, हमें उन श्लोको को नही सुनना, परंतु आपसे यह जानना है कि - इन १८००० हजार श्लोको में कितने श्लोक मोक्ष या आत्यन्तिक कल्याण को देने वाले है?

पंडित दीनानाथ यह सुनते ही गहन विचार में डूब गये। आज तक वे श्लोक कंठ करने में मन को लगाये थे। मोक्ष में मन नही लगाये। इससे भट्टजीने कहा कि, ओह ? महाराज ! आप तो सर्वत्र विचरण करके कल्याण का कलश चढाया है। लेकिन कल्याण की चाहना कभी मन में नहीं आयी।

''तो इतने श्लोक कंठ करने का क्या प्रयोजन ? जो शास्त्र मुक्ति या मोक्ष न दिलावे ऐसे शास्त्र पढने से क्या लाभ। इससे आत्मा का कल्याण तो होने वाला नही है। आत्मा तथा परमात्मा ज्योति बिन्दु स्वरुप है।

पंडिताई तथा विद्वता के सागर के समान पंडित दीनानाथ भट्ट भगवान स्वामिनारायण के चरण में गिर पडे। वे अवश्य विद्वान थे लेकिन उसके रहस्य को; मर्म को श्री सहजानंद स्वामी के पास से जान सके।

संक्षेप में कहने का तात्पर्य यह है कि शास्त्र कोई झोपड़ पट्टी करने की विद्या नहीं है, आंख बन्द करके आचरण करने का नियम भी नहीं है। शास्त्र तो सत्य का मार्ग बताता है । जीवन की कला को खिलाता है और आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त करता है । केवल शास्त्रो के शब्द को पकड़ने वाला अपने अनुपम सत्य को खो देता है जब कि उसके सत्य को जानने वाला निश्चित रुप से अक्षरधाम का अधिकारी होकर परमकृपालु करुणानिधान ऐसे श्री सहजानंद स्वामी के पास पहुँच जाता है, इसके साथ ही आत्यंतिक कल्याण को भी प्राप्त करलेता है।

इसी सन्दर्भ में न्हानालाल कविने लिखा है कि ''तरी जाये मोक्ष न पण महो।''

श्रीहरि की भक्ति का उत्सव

- पटेल गोरधनभाई शंकरदास (सोजा)

सर्व सिद्धांतनुं सिद्धांत, सिद्धांत एह ज, रेवुं प्रगट प्रभु परायण, मन वचन कर्मे करी, भजवा स्वामिनारायण 'एह ठीक देखवी' वात, अंतरे, पछी रेवुं निर्भय नचिंत एटलु समज्या, सर्व समज्या, समझाणी सनातन रीत, मळ्यो मारग महासुखनो, जेमा दुःख नहि लवलेश निष्कुळानंद नकी ए वारता, मानवो मोहानो उपदेश सारसिध्धि॥१०॥ कडवुं ॥४७॥

धर्मगुरु: आचार्योंका जन्मोत्सव मनाने का उद्देश्य प्रसाद में तन्मय होने का नही है किंतु उत्सव तो प्रभु में तन्मय होने के लिए है और गुरु की महिमा को जानने के लिए है।

तो सत्संग में बड़ा कौन ? तो पहले अपने इष्टदेव का महात्म्य जाने, जो भगवान के दर्शन में ही सुख प्राप्त करे श्रीहरि की उपासना करते है। और धर्मशास्त्र में कहा है कि जहाँ इस प्रकार हो और भक्ति से युक्त हो वह बड़ा है और अपने इष्टदेव सहजानंद स्वामी को निष्कुळानंद स्वामी के शब्दो में :

ए छे पुरुषोत्तम अधिराय रे,
वासुदेव नारायण रे,
परमात्मा परब्रह्म नाम रे,
ब्रह्म इश्वर परमेश्वर श्याम रे,
कहे विष्णु वैकुंठपति स्वामि रे,
ए छे अनंत नामना नामी रे,
ए छे अक्षर पर अविनाश रे,
सर्व कर्ता नियंता निवसा रे,
कारण कारण काल विकास रे,
अंतर जामि रन्गुण स्वयं प्रकाश रे,
ए छे स्वतंत्र सर्वधार रे,
एवा भक्ति धर्मना सुत रे
अनंत कोटि मुक्त ब्रह्मरुप रे,
तेमने उपस्या योग्य अनूप रे
अनंत कोटि ब्रह्मांडनी जेह रे,
उत्पत्ति स्थिति लय कहिए तेह रे,
एवी लीला जेनी अति सार रे,
एवा धर्मकुंवर किरतार रे,
माया पुरुष कृतांत अनादि रे,
प्रधानपुरुष महत्व आदि रे,
ए आदि अनंत शक्तिधार रे,
एना प्रेरक धर्म कुमार रे
अनंत कोटि ब्रह्मांडना जेह रे,
स्वामि राजाधिराज छे तेह रे
भक्तवत्सल स्महाभय हारि रे,
एवा धर्मकुंवर सुखकारी रे

और शिक्षापत्री में एसे घनश्याम स्वरुप, नीलकंठवर्णी स्वरुप और सहजानंद स्वामी स्वरुप के लिए लिखा है -

सः श्रीकृष्ण परब्रह्म भगवान्पुरुषोत्तमः ।
उपास्य इष्टदेवो नः सर्वाविर्भावकारणम् ॥

सभी कर्मो का फल देने वाले भगवान श्रीकृष्ण है। पुरुषोत्तम ही हमारे इष्टदेव है, उपासना के योग्य है। सभी अवतारो के कारण है। परब्रह्म सबकी उत्पत्ति के कारण है, सभी के उपास्य होने के कारण सर्वश्रेष्ठ है। शिक्षापत्री में श्रीहरि कहते है।

स्ववर्णाश्रम धर्मो यः स हातव्यो न केनचित् ।
परधर्मो न चाचर्यो न च पाखंडकल्पितः ॥

शि.श्लोक - २८

जो श्रीहरि की आज्ञा में हैं वे धर्मकुल में है। जिसे श्रीहरि ने खुद आचार्य पद अर्थात् धर्म की धुरा को संभालने की जिम्मेदारी दी है। जो आज भी धर्म, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का आचरण करते है। ''आचरति इति आचार्य'' से आचार्य पद पर बैठे सभी के दीक्षा गुरु प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी

महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री साक्षात् श्रीहरि के स्वरुप है। उनकी आज्ञा मानना हम सभी का भागवत धर्म है । उनकी भक्ति शुद्ध स्वरुपा, भागवतधर्म प्रधान, मोक्षप्रदा है । जिनकी भक्ति श्रीहरि को पाने की है । कहेता-कहेता प्रथम मस्तक मूकी वर्ती लेवुं नाम जोने-मांय पड्य ते महासुख माळे देखनहारा दाजे जो, एटले तो समजी विचारी भक्ति करो घनश्यामनी, भक्ति करो भावे। भाव विनानी भक्तिये राजी नही थाय श्रीहरि।''

भगवान कोमूर्ति का आश्रय हो, भगवान का सदैव नाम लेने वाला हो किन्तु यदि धर्म (शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन) न हो तो कुछ प्राप्त नही होता ऐसी भक्ति निर्थक है । ऐसे व्यक्ति को चांडाल समझना - इसलिए शिक्षापत्री में लिखे नियमो का पालन करे वह धर्म में है और धर्म में रहकर ही भगवान का स्मरण करना चाहिए। श्रीहरि खुद कहते है कि ''मैने जहाँ-जहाँ उत्सव किया वहाँ पर परमहंस, ब्रह्मचारी और हरिभक्त, सत्संगी भाई-बहन एकत्रित हो और भजन-कीर्तन करे, पूजा-पाठ करे, कथा करे, कथा सुने और चिंतन करे और इन सभी का स्मरण अंतकाल में हो जाये तो जीव को मोक्ष जरुर से प्राप्त होता है।(वच. म.प्र. ३५)

और श्रीकृष्ण भगवानने भ.गीता में कहा है -

"येयथामां प्रपद्यन्ते तांतथैव भजाम्याहम् ॥"

अर्थात् जो भक्त जिस तरह से मेरी भक्ति करते है उसी प्रकार से मै उनकी भावना को सफल करता हूँ''मैं तो सदैव मेरे भक्तो के आधीन हूँ। और कहा है।

"पापं तापं च दैत्यं च हरति संत समागम ।"

तो श्रीहरि के सत्संग को शुद्ध रुप समझे और संतो के संग से हरि प्राप्त होते है उनका द्रोह नहीं करते। संत संग से पाप, पीडा और सभी तकलीफ खत्म होती है और श्रीहरि के साकार स्वरुप की प्राप्ति होती है। इस प्रकार संत ही सदाचार धर्म के प्रेरक है।

अनु. पेईज नं. १० से आगे

कल्याण मार्ग में अधिक अग्रेसर होता है ।ऐसा श्रीजी महाराज का वचन है । कार्य कर्ताओ का धर्मादा का उपयोग देव सेवा में संपूर्ण सक्षमता से करना चाहिए। देव-धर्मादाकी रकम पचाना अधिक कठिन है।

● हरिभक्तों को देव धर्मादा घर में नही रखना चाहिए । इस शरी रका भरोसा नही है । इसीलिए उसे तत्काल देव के हवाले कर देना चाहिए। कार्य कर्ताओं को भी इस रकम को संग्रहित न करके, धर्मवंशी आचार्यश्री की ईच्छा से उसकी सेवा के अनुसार देव सेवा में उपयोग करना हितावह है।

● अनीति से मिले धन में से धर्मादा करके पुण्य कमाने की अधर्मवृति इस संप्रदाय में नही है। हरिभक्तों को अपने पुरुषार्थ से श्रीजी की आज्ञा अनुसार प्राप्त हुए धन उत्यार्जन में से धर्मादा करना चाहिए।

● पुरुषार्थ से प्राप्त धन में से दशांश विशांश धर्मादा करना चाहिए। परंतु कभी देव ईच्छा से केवल प्रभुकृपा से अचानक कोई धन प्राप्ति हो तो, उसमें से श्रद्धा अनुसार अधिक से अधिक धर्मादा करना चाहिए।

● इस संप्रदाय में देव को हरिभक्त दान देते है। तथा हरिभक्त वापस देव को प्रदान करता है, इस प्रकार का आदान-प्रदान एक योग है परंतु उसके पीछे भी भावना ही मुख्य है। देव-हरिभक्त सत्संगी को अपना मानकर उसे सुखी करने हेतु अन्न-वस्त्र प्रदान करते और हरिभक्त भी उस कृपा की कदर करके अपनी भावना श्रीकृष्णार्पण करता है।

Look to the Substance and not the form only श्रीजी की आज्ञा के पीछे का भाव अत्यंत उमदा और कल्याणकारी है।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण के अनुयायियों में नहिवत दोष होता था, जिससे अंग्रेज सरकरा ने श्रीजी महाराज को अमदावाद में मंदिर बनाने के लिये जमीन को भेंट में दिया। अहमदाबाद में विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर स.गु. आनंदानंद स्वामी की देखरेख में तैयार हुआ था। जिसमें श्री नरनारायणदेव इत्यादि देवों की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा श्रीजी महाराजने अपने हाथों से की। तीन दिन तक यह प्रतिष्ठा विधिचली थी, उस समय श्रीजी महाराजने जिन वस्त्रों को, अलंकारो को तथा अन्य छोटी-छोटी जिन वस्तुओं का उपयोग किये थे उन सभी को म्युजियम के हाल नं. १ में रखा गया है। इसके अलांवा तीनो गर्भगृह के मूल दरवाजे को भी प्रदर्शित किया गया है। सुख शैया का मूल परदा तथा कुबेरदास की छड़ी तथा महाराज जिस पगड़ीको धारण किये थे उसे भी उसी रुप में प्रदर्शित किया गया है। संप्रदाय के इतिहास में पूर्व का स्मरण कराने वाली इन वस्तुओं का दर्शन मात्र से दर्शनार्थियों को रोमांच हो उठता है।

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।
मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**
नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अगस्त-२०१३

रु. २,००,०००/-	एक हरिबक्त बहन, अमदावाद।
रु. ६१,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो १५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर समस्त हरिभक्त।
रु. ३०८००/-	पटेल नारणभाई ए. सहपरिवार, शिकागो
रु. ३०७५०/-	चौधरी सुरेशभाई एस. एल.ए.
रु. ३०५००/-	डॉ. वालजीभाई मुजपरा, कलिवलेन्ड।
रु. २१६००/-	पटेल केतन, अमेरिका
रु. १५८००/-	सोनी मधुसूदन सह परिवार, सान होझ
रु. १५६००/-	शामजी खीमजी वरसाणी, सामत्रा
रु. १११११/-	रामजी जेठामल वरसाणी, अमदावाद
रु. ११०००/-	धीरजभाई करशनभाई पटेल, अमदावाद
रु. ११०००/-	बी.ए. मोदी, अमदावाद
रु. ११०००/-	बाबुभाई कचराभाई पटेल, राणीप
रु. ११०००/-	प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री की प्रसन्नता से श्रीमती क्षमाबहन वी. पंड्या
रु. ६८५५/-	काचा टेलर्स परिवार, लेस्टर (यु.के.)
रु. ६१००/-	खेर हिंमतभाई, डिट्रोईट
रु. ६१००/-	जोशी रुपेश एल., शिकागो
रु. ५१००/-	श्रीजी प्रसन्नार्थ विभाकर एस. पंड्या
रु. ५०००/-	अरविंदभाई त्रिकमदास, करजीसण
रु. ५०००/-	मीनाबहन जोषी, बोपल
रु. ५०००/-	प्रशांतभाई कांतिलाल पटेल
रु. ५०००/-	डॉ. हरिकृष्णभाई गोकलभाई, सापावाडा
रु. ५०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) दरबारगढ, मोरबी
रु. ६५५००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो समस्त हरिभक्त १५ वें पाटोत्सव के निमित्त

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अगस्त-२०१३)

ता. ६-८-१३	रमेशभाई कानजीभाई राधवाणी, सीसल्स
ता. १८-८-१३	(प्रातः) अ.नि. चंपाबहन गंगारामभाई डोक्टर - कृते बालमुकुंद तथा श्वेताबहन, घाटलोडीया
	(सायंकाल) श्री नरनारायदेव महिला मंडल, साबरमती
ता. १९-८-१३	श्री स्वामिनारायण मंदिर - बायरन मूर्ति प्रतिष्ठा के निमित्त
ता. २०-८-१३	नारणभाई गोकलभाई पटेल - सापावाडा
ता. २५-८-१३	(प्रातः) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - बालासिनोर
	(सायंकाल) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - साबरमती
ता. २६-८-१३	श्री स्वामिनारायण मंदिर - शिकागो पंद्रह वें पाटोत्सव के निमित्त

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी
(गांधीनगर)

अपने इग्यारह नियम

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

(गतांक से शुरु)

"निर्विकल्प उत्तम अति निश्चय तब घनश्याम"

प्रेमानंद स्वामी रचित इस पद में नियम की बात कर रहे है । हम छः नियमो को सविस्तार देख चुके है अब चलिए आज सातवाँ नियम देखते है ।

सातवाँ नियम : चोरी न करनी काहु की ....

काहुकी का अर्थ किसी भी चीज की । यह एक बहुत सावधानी रखने वाला नियम है । जीव का स्वभाव है जो मिले उसे, तुरंत उठा लेता है । किसी भी वस्तु की चोरी नहीं करते । न पडोसी की । न ही किसान की । स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा तो यह है कि - यदि किसी खेत में से आते वक्त न मूँगफली तोडना न टमाटर । खेत के मालिक को पूछे बगैर नहीं तोड़ना चाहिए। सावन चल रहा है । ठाकुरजी को फूल चढाते है तो किसी के यहाँ से तोड लाते है, भगवान का ही तो काम है ऐसा विचार तक नहीं करना, तोडना तो दूर की बात है । और तोड़ना हो तो पूछे बगैर नहीं तोड़ना चाहिए । पूछना भाई ! आपके यहाँ फूल तो बहुत है । यदि आपको तकलीफ नही हो तो दो-चार फूल मंदिर के लिए लेजाऊ ? यदि हाँ कहे तो लाना नही तो मत लाना । किसी भी चीज की चोरी नहीं करना । ओफिस में कागज पड़े है घर लिखने के लिए ले चलते है यहाँ तो बहुत है ऐसा ख्याल आता है तो गलत है, लेना है तो पूछ करदी ले । पूछे बगैर तो एक पीन तक नही उठाना चाहिए.

चोरी न करने के संकल्प में भगवान स्वामिनारायण बहुत ही सख्त है । जोबनपगी सुधर गया था, उसने डकैती का काम बंधकर दिया था । और भगवान के चरण में मस्तक रखकर परम भक्त बन गये थे । हाथ में अखंड माला आ गई और उन्होंने पूरा जीवन समर्पण कर दिया ।

स्वामिनारायण भगवान के साथ वे एक बार सत्संग प्रचार में गये थे सुबह का वक्त था । वे किसी खेत में बबूल था । उसमे से एक दतून तोड़ा । पूराने जमाने में लोग दो-तीन वस्तुए साथ रखते थे ।

''रस्सी, लोटा, चाकु'' ये तीन वस्तुए रखते थे । चाकु निकाल कर एक दातून लिया और स्वामिनारायण भगवान के पास गया । तभी प्रभु ने पूछा ''यह दातुन कहाँ से लाये ?'' सामने के खेत से, तब प्रभु बोले खेत के मालिक से पूछा था क्या ? नहीं.... प्रभु बोले जाइये पता करिये और उनसे मांफी मांगिये । एक दातून के लिए माफी मांगने को कहा जोबनपगी निकले और पूछते पूछते उसके घर पहुंचे । रास्ते में पूछा कि आप कौन भाई तब बोले मैं जोबनपगी सुनने वाले को भी लगा कि मैंगया जान से । और दौडते हुए बताने गया । चीखते हुए बोला ''भाई जान बचाओ, घर छोड कर भागो, जोबन वतालिया आ रहा है ।'' तब तक जोबन पगी पहुंच गये, पूरा परिवार नाम मात्र से डरा था । तब बोले आप क्यों डरे हुए है । मेरी बात सुने, वह खेत आपका है ? सामने से उत्तर दिया ''हा'' । फिर बोले उस खेत के बबूल के पेड़ से आपको पूछे बगैर दातून लिया था । इसलिये मांफी मांगने आया हूँ । तब पटेल परिवार से बोला आप पूरा बबूल ले जायें किंतु अभी यहाँ से चले जायें । जोबनपगी बोले - पटेल डरो मत, तुम जैसे मुझे जानते थे आज मै वह नही हूँ । ये देखीये कंठी ये तिलक, ये माला और हाँ मैने पूछे बगैर दातुन लिया इसलिए मांफी मांगने आया हूँ।

इसलिए जब हमे कुछ लेने का मन हो तो न तो टेबल के ऊपर से लेना न टेबल के नीचे से लेना । यदि सोचना की मेरी कंठी ! और मेरा तिलक ! मैं उसी परमात्मा का भक्त हूँ । जिसने जोबन से दातुन के बदले में माफी

पेईज नं. २०

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"छल, कपट, मद के विना भक्ति करनी चाहिए"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

कलियुग में कैसा चल रहा है। गुण की जगह पर धन को, सत्ता को, प्रतिष्ठा को मान मिलता है। व्यक्ति धर्म का आचरण करता है लेकिन निर्धन है तो उसकी गिन्ती नही होती। धनवान लोग अधर्मी होते है, फिर भी उन्हें संमान मिलता है। कितने लोग तो धन प्राप्ति के लिए धर्म का प्रचार करते हैं। दिखावा के लिये धर्म का पालन करते है। करनी और कथनी में अन्तर होता है। सामने मिलने पर कुछ बोलते है, हृदय में कुछ ही चलता रहता है। पीछे जाने पर निन्दा करते हैं। दिखावा पर लोग अधिक ध्यान देते है। सभी को दिखावा अच्छा लगता है। यह सब मनुष्य निर्मित है। परंतु परमात्मा सब कुछ जानते है। इसलिये छल-कपट नहीं करना चाहिए। मन साफ रखना चाहिए। थोडा भी मद-अहंकार विना किये अन्तःकरण से भक्ति करनी चाहिए। मद चार प्रकार का होता है - (१) विद्या का मद (२) धन का मद (३) युवानी का मद (४) अधिकार का मद।

(१) विद्या का मद : विद्या का मद कैसा है - हम जब सत्संग में बैठे होते है तो कभी कोई बात आती है तो तुरंत आप कहते हैं कि हमें सब खबर है। हमें सबकुछ आता है। हम जो जानते हैं और अभी जो कथा में आता है उसमें फर्क क्या है ? मन में इस प्रकार के विचार आते है। सत्संग में जब बैठते हैं तब अक्कड स्वभाव में बैठते हैं। इसी को विद्या का मद कहा जाता है। यदि मद के विना शांति से कथा श्रवण की जाय तो कथा में कुछ नया ही मिलेगा।

(२) धन का मद : धन का मद कैसा होता है - तो अपने से जो आर्थिक ढंग से कमजोर हों उनके साथ बैठने में या बात करने में शर्म आती है। अपने से कमजोर व्यक्ति के साथ वात करने में भी दुर्व्यवहार करते है। अपने समान के व्यक्ति के साथ अच्छा वर्तन करते हैं। इसी को धन का मद कहते हैं।

(३) युवानी का मद : अपने शरीर में बल हो, ऊमर कम हो, आरोग्य अच्छा हो, तो अपने समान व्यक्ति के साथ व्यवहार करते हैं तथा उसके साथ चलते हैं। उसके साथ रहते हैं। उनके साथ ही अच्छा लगता है। अपने से कमजोर हों तो उसके साथ बैठने में व्यवहार करने में, वातचीत करने में, सेवा करने में अच्छा नही लगता। अपने से अशक्त व्यक्ति का अपमान, मश्करी करने में अच्छा लगता है। इसी को युवानी कामद् कहते है।

(४) अधिकार का मद : अधिकार मिलते ही थोड़े समय तक समय से काम होता है, बाद में अधिकार अहंकार में परिवर्तित परिवर्तित हो जाता है। यश, नाम, पद, प्रतिष्ठा, कीर्ति ये सबको पचाने के लिये नम्रता तथा सहन शक्ति की जरुरत होती है।

इसलिये छल-कपट के विना भगवान की भजन करनी चाहिये। यदि कोई परेशान करता हो तो जगत की बात समझकर ध्यान नहीं देना चाहिए। लेकिन उसमें से निकलने की उपाय अवश्य सोचनी चाहिये। एक बार एक कूयें में गदहे गिर गये उसे निकालने का प्रयास मालिकने किया, निकले नहीं। बाद में विचार किया कि ए सभी वृद्ध हो गये हैं, काम के नहीं है। जाने दो। बाहर निकालने का प्रयास करने पर मरजायेंगे। दूसरो ने कहा कि इस तरह कितने दिन तक पीडित होकर मरेंगे ? पुनः मालिक ने कहा कि ऐसा करते हैं कि ऊपर से माटी डालते है जल्द मरजायेंगे। जब मालिकने ऊपर से माटी डालना प्रारंभ किया तो गदहों ने क्या किया ? सभी गधे अपने ऊपर की मिट्टी को खंखेरकर खड़े हो गये। इस तरह करने से माटी का ढेर हो गया और उसी माटी के सहारे वे गधे बाहर आ गये। इसी तरह जगत के लोग तो माटी डालने का ही काम करते है अपने को उसमें से अलग होना होगा। जगत के लोगों की बात पर ध्यान देने से प्रगति रुकजायेगी। यदि

योग्य मान-सन्मान न मिले तो भी दु:खी नहीं होना चाहिये। काम करते रहना है। किसी के कहने से कोई बड़ा नही होता। जो है वह सत्य है। परमात्मा के पास जाना है तो लोगों की बातों में ध्यान विना दिये स्वकर्तव्य निष्ठ रहना चाहिये। भगवान श्रीकृष्ण जब मुरली बजाते तो सभी उन्हे मुरलीधर कहते। जब वे पर्वत धारण किये तो गिरिधर कहने लगे। लोग क्या कहते है, उनके कहने से कोई फर्क नही पडता है। जो है वही रहेगा। इसलिये अन्त:करण शुद्ध रखते हुये भगवान की भक्ति करनी चाहिये, परमात्मा आपको खूब शक्ति प्रदान करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

●

अपकार के उपकार
- सां.यो. कोकिलाबहन (सुरेन्द्रनगर)

संतो की क्रिया देखकर कुसंगी सत्संगी हो जाते है। सच्चे संत की क्रिया ऐसी होती ही है। उनका जीवन परोपकारी होता है। संतो को देखते ही जीवात्मा धन्य भागी बन जाता है। संतो का जीवन नदी की तरह है। कल्प वृक्ष के समान है। जिस तरह वृक्ष स्वयं ताप को सहन करके राहदारी को छाया प्रदान करता है। इसी तरह संत का जीवन होता है, फिर भी कितने कुसंगी उन्हें गाली तो देते ही है। मारते है, कीचड़ फेकते है। फिर भी संत को उन के प्रति कोई दुराव नहीं होता।

एक बार गुणातीतानंद स्वामी संतो के मंडल को साथ लेकर जूना सावर गाँव गये। वहाँ पर मीठा साकरीया के यहाँ निवास किं। ठाकुरजी को वहीं पर प्रसाद अर्पण किये, लेकिन स्वयं प्रसाद ग्रहण करें कि उसी समय उसी गाँवके प्रधान को पत्ता-चला और वह वहाँ आकर लात मारकर सभी भोजन गिरा दिया और संतो का अपमान करके गाँव से बाहर भगा दिया। संत शेत्रुजी नदी के किनारे आकर रुके।गुणातीतानंद स्वामी ने कहा, अपकार के ऊपर उपकार करना ही अपना धर्म है। जो कुछ हुआ वह भगवान की इच्छा से। इतने में कोई आकर कहा कि स्वामी आपका अपमान गाँव के प्रधान ने किया यह तो अच्छा नहीं हुआ, लेकिन उसका परिणाम उसे मिल गया। आज ६० वर्ष हो गया लेकिन नि:सन्तान है। आप जैसे कितनो को परेशान किया है। यह सुनकर स्वामीने कहा कि संतो आप सभी अभी नि:सन्तान को संतान करने के लिये इसी समय पाचं-पांच माला फेरिये। जिससे उसके घर सन्तान हो और वह सन्तान संस्कारी हो। इसके बाद उसके घर सन्तान हुई। पुत्र १२ वर्ष का हो गया। संत पुन: वहाँ पधारे। उसी नदी के किनारे रुके। वह बालक संतो के पास आया। और कहा कि आप लोग मेरे घर चलिये। मैं गाँव के प्रधान का पुत्र हूँ। संतो ने कहा कि आप के पिताजी लेने आयें तो ही हम आयेंगे। बालक घर जाकर पिताजी से कहा, उसने तुरन्त मना कर दिया। बेटा रोने लगा। मां ने कहा किवह रो रहा है आप क्यों नहीं मानते ? आप जाईये संतो को बुला लाईये। पत्नी के आदेश से बाप-बेटे दोनो संतो के पास गये, प्रधान ने घर आने के लिये संतो से आग्रह किया। संतो ने कहा कि आप का घर अपवित्र हो गया है। पूरे मकान को धोकर गाय के गोबर से लीपो, बाद में हम आयेंगे। संतो ने जैसा कहा वैसा प्रधान ने किया बाद में सन्त उसके घर पधारे। संतो के प्रताप से नास्तिक के घर में आस्तिक बेटा पैदा हुआ। जिस प्रधान ने अपमानित किया था। वही अपने घर लेजाकर सम्मानित किया। यह संस्कारी पुत्र के प्रभाव से।

पुत्र ने बाप से कहा कि पिताजी ये संत गुरु करने लायक है। इनसे कंठी बांधकर जीवन को सत्मार्ग - सत्संग में लगाया जा सकता है। पिता संतो से कंठी बांधकर ७० वर्ष की उम्र में सत्संगी हुये। अपकार के बदले में संतोने उपकार किया। जहाँ उनका मकान था वहाँ पर स्वामिनारायण मंदिर बनाया गया।

महापुरुष मारखाकर भी सत्संग की वृद्धि किये थे। अपकार करने वालों का भी सन्तों ने उपकार किया है। यह अपने संप्रदाय का माहात्म्य है। आज तो पूरे दुनिया में सत्संग की खुश्बू फैल गयी है। महाराज इस धरती पर आकर प्राणीमात्र का उपकार किये है।

●

भक्त गोविंदराम तथा अमरबाई
पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल)

एकबार भगवान स्वामिनरायण सभा में बिराजे थे। उनके हाथ में सुगन्धित फूल का गुच्छा सुशोभित हो रहा था। उसे कभी-कभी सूंघते और आंखो में लगाते। यह

देखकर मुक्तानदं स्वामीने कहा कि महाराज यह कितना भाग्यशाली है जिसके ऊपर आप की इतनी कृपा वरस रही है।

महाराज ने कहा, स्वामी ! आपको भी इस फूल के प्रति ईर्ष्या तो आही गयी । स्वामी ! वह फूल साधारण नहीं है । इस में हमे मेथान के गोविंदराम तथा अमरबाई की सुवास दिखाई देती है।

महाराज ! थोडा विस्तार में कहिये । कैसे हैं गोविंदराम कैसी है अमरबाई ?

श्रीहरिने कहा, स्वामी ! देखिये हम कितने लोगों को साधु किये बाद में उन्हें संसार में भेंज दिये । कितनी स्त्रियों को विवाह की आज्ञा दी बाद में उन्हें संसार से अलग कर दिये । लेकिन मेथाण के गोविंदराम तथा अमरबाई की बात तो निराली ही है । वे दोनो दंपती भी दरवाजा खोलकर असिधाराव्रत करते हैं । कहते कहते महाराज भाव विभोर हो गये । सभा में अन्य भक्त भी महाराज के मुख मंडल को देखते रहे । महाराजने कहा, स्वामी ? ये तो सादी के समय से हमारे भक्त हो गये और भाई बहन बन गये । संसार उन्हे पति पत्नी मानता है । अमरबाई भी अपने सौभाग्य को छोड़ी नही है । गोविंदराम भी अपनी प्रतिज्ञा का ढंढेरा नहीं बजाये । फिर भी दोनो ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करते हैं - एक दूसरे के स्पर्श होने पर निर्जला व्रत करते हैं।

स्वामी ! अलग रहकर ब्रह्मचर्य पालने वाले तो बहुत मिलते हैं लेकिन एक साथ रहकर कितने ?

स्वामी ! इस फूल में तो उस दम्पती की सुवाह मिल रही है।

महाराज की बात सुनकर सभा में उपस्थित सभी लोग उस भक्त के चरण में नतमस्तक हो गये ।

●

सगपन हरिवर का
- जिज्ञासा जयंतीलाल राणपरा (मोरबी)

भक्तों ! महाराज बहुत दयालु है । वे भक्तों को अक्षरधाम जाने का मार्ग बताते है।

एकबार संत किसी भक्त के घर पदार्पण किये । वहाँ संतोने सुंदर कीर्तन गाया -

रे सगपण हरिवर नुं साचु,
बीजु सर्वे क्षण भंगुर काचु, रे सगपण ।

जिस घर पधारे उसके बगल वाले मकान में एक माताजी रहती थी । माताजी कीर्तन सुनकर वहाँ आयी । बाद में वही पद वारंवार घर के काम करते समय बोलती रहती । कूए पर पानी भरने जाती तो वही पद गाती रहती । **"रे सगपण हरिवर नुं साचु"** । सभी स्त्रियां पूछती कि आप यह क्या बोलती रहती है । तब माताजी कहती पडोश में स्वामिनारायण भगवान के साधु आये थे वे **"रे सगपण हरिवर नुं साचु"** यह गीत गाये, उस गीत में से इतना याद रह गया ।

माताजी जब तक जीवित थी तब तक यह पद बोलती रहीं । अन्तिम समय में इस गीत को बोलती रही, परिणाम स्वरुप भगवान स्वामिनारायण को सगपण का भाव दिखाना पड़ा । और वे ब्रह्मानंद स्वामी को साथ लेकर उस माताजी के पास आये सगपना को चरितार्थ किये - अपने अक्षरधाम में ले गये ।

भक्तों ! भगवान कितने दयालु हैं । केवल एक पद का चिन्तन करते रहने से अपने स्वधाम की प्राप्ति करा दिये ।

●

स्वामिनारायण कौन
- जानकी निकीकुमार पटेल (घाटलोडिया)

जीवन में हास्य एक अद्‌भुत औषधिहै । यदि विचार अनुकूल होगा तभी आनंद मिलेगा, प्रतिकूल होने पर चाहे कितना बड़ा कलाकार होगा वह आनंद आपको नहीं मिलेगा ।

हास्य तो भगवान को भी अच्छा लगता है । उत्तर गुजरात के आजोल गाँव की सीमा में स्वयं भगवान स्वामिनारायण ने भी हास्य का आनंद लिया था ।

एकबार भगवान स्वामिनारायण तथा मुकुंद ब्रह्मचारी आजोल गाँव के बाहर से निकल रहे थे । वहाँ पर एक कूएं में से पानी लेने के लिये गाँव की स्त्रियां एकत्रित थी । कूंआं की गड़ारी की आवाज आ रही है सभी फटाफट पानी भरकर कूंए से नीचे उतर गयी । उसी में से एक बहन की दृष्टि भगवान स्वामिनारायण के ऊपर पड़ती है । वह अपने पिता के घर प्रभु का दर्शन की थी । वह अपनी सखी से कहती है कि अरी, सखी ? तुम्हे खबर है ये स्वामिनारायण भगवान हैं । भगवान स्वामिनारायण की किसी पर दृष्टि पड़ जाय तो

वह सुखी हो जाता है।

दूसरी स्त्री ने कहा कि तो चलो भगवान स्वामिनारायण का चरण स्पर्श करते हैं। यह सुनते ही सभी स्त्रियां साथ चल देती है। भगवान आगे आगे चल रहे थे सभी उनके पास पहुंच जाती है। भगवानने कहा कि मैं स्वामिनारायण नहीं हूँ, मुझे प्रणाम मत करो, मेरे पीछे जो आ रहे हैं वे स्वामिनारायण हैं, उन्हीं को प्रणाम करो। वे प्रणाम करने के लिये मना करें तो भी उनके चरण स्पर्श करके प्रणाम करना।

यह वात सुनते ही सभी स्त्रियां मुकुंद ब्रह्मचारी के पास गयी। अरे, भगवान हमारा कल्याण कीजिये ऐसा कहकर सभी ब्रह्मचारी के चरण पकड़ने के लिये चली। अब ब्रह्मचारीजी उन सभी को देखकर दौड़ने लगे। हे महाराज। आपने यह क्या किया है परंतु महाराजने इशारा से कहा कि कोई बात नहीं पैर स्पर्श करवालीजिये। दूर से देखकर हंस रहे हैं। ब्रह्मचारी ने कहा कि प्रभु तीन दिन का उपवास अभी पूरा हुआ, अब दूसरा उपवास करना पड़ेगा। महाराज की आज्ञा होते ही ब्रह्मचारीजी कहते है कि अब आप लोग दूर हटिये अब आपके सात पीढी का कल्याण हो गया।

बहनों को प्रोत्साहित करते हुए श्रीहरिने कहा कि आप लोग देखीये, स्वामिनारयाण कितने दयालु है। आप की सात पीढी का कल्याण कर दिये। ब्रह्मचारीजी नाराज होकर कहते हैं कि स्त्रियों को स्पर्श क्यों कराये। मुझे कल फिर उपवास करना होगा। महाराज ने कहा कि - खोखरा से यहाँ तक पैदल चलकर आये थे, थोड़ी थकान से मन खिन्न था। आज थोड़ी हंसी आयी। ब्रह्मचारीने कहा कि, महाराज ! आप को हंसी आ रही है। तीन दिन के उपवास के बाद आज एक कटोरी भोजन मिला। फिर वही आपने किया। उपवास करना पड़ेगा। महाराजने कहा चिंता मत कीजिये, यह वात हम दोनो ही जानते हैं।

अनु. पेईज नं. १६ से आगे

मंगवाई थी। इसलिए "चोरी न करनी काहुकी" यह ग्यारह नियम में से सातवां नियम है। यह याद रखने जैसा नियम है। (क्रमशः)

•

भक्तवत्सल भगवान

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

एकबार श्रीजी महाराज गढपुर में लाडुबा के पहाँ बिराजे थे। सुराखाचर, दादा खाचर आदि कई भक्त बैठे थे। मूलजी शेठ भी थे। तभो किसी हरिभक्तने आ कर कहा, हे महाराज ! बारिस ऐसे ही खत्म हो गई एक बूंद वर्षा नही हुई खेत सूखे है। वर्षा हो ऐसी कृपा करे। तब महाराज बोले पहले नरसिंह महेता हुए उन्होने मल्हार गाया था। आप ब्रह्मानंद स्वामी को बुलाईये वे भी नरसिंह महेता जैसे है। वे मल्हार गायेंगे तो बारिस होगी। फिर ब्रह्मानंद स्वामी आये। प्रेमानंद स्वामी भी आये। दोनो साथ में बैठे और प्रेमानंद बाजा बजाने लगे। पहला पद पूरा हुआ तब तक बादल दिखाई देने दूसरा पद पूरा होते ही बादल गरजने लगे। तीसरा पदपूर्ण होते ही जोरो की बारिस होने लगी। इस प्रकार महाराजने कृपा कर बारिस करवाई।

जिस में निष्ठा हो और श्रध्धा हो और भगवान का भजन करे तो वह भक्ति समर्थ हो जाती है। जिससे काम, कर्म, माया पर विजय पायी जा सकती है। इस प्रकार भगवान की कृपा से हर स्थान पर सफलता प्राप्त होती है।

जगत जाने या न जाने किंतु अनंत कोटी ब्रह्मांड के कर्ता धर्ता श्रीहरि है। जो कुछ भी होता है वह परमात्मा की इच्छा से ही होता है।

भगवान स्वामिनारायण के वचन ही है कि भगवान की ईच्छा से ही सूर्य-चंद्र उगते है और अस्त होते है। उनकी इच्छा से ही समुद्र मर्यादा में रहता है। आकाश में जल रखा है जो वर्षा ऋतु में बरसते है। यह सब भगवान की इच्छा से होता है।

और स्वामिनारायण भगवान जेतलपुर के पांचवे वचनामृत में कहते है यदि हम चाहते है कि बेटा हो तो बेटा होता है, हम नहीं चाहते तो नही होता। मेरे चाहने से ही रोग होता है और मेरे चाहने से ही ठीक होता है। जब मैं चाहता हूं तब बारिस होती है और नही तो नही होता। सब कुछ भगवान की ईच्छा से होता है। भगवान कभी-कभी बहुत बड़ी लीला करते है !!! इस प्रकार भक्तो की प्रार्थना सुन भक्तवत्सल भगवान कृपा करते है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में कृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवं प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महारजाश्री के आशीर्वाद से स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से परमकृपालु भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव के शुभ चरणकमल में सावन कृष्णपक्ष-८ श्री कृष्णजन्मोत्सव ता. २८-८-१३ को रात्रि ९ से १२ तक दिव्य सभा मंडप में मनाया गया। सुप्रसिद्ध गायक कलाकारश्री जयेशभाई सोनी, श्री पूरव पटेल तथा साथी कलाकारोने नंदसंत द्वारा रचित कीर्तन भक्ति-रास-गरबा का गान किया। रात्रि में १२-०० बजे बाल प्रभु को सुवर्ण के पालने में झुलाकर श्रीकृष्ण जन्मोत्सवकी आरती धूमधाम से कि गयी। अंत में सभी को पंजीरी का प्रसाद बांटा गया। इस प्रसंग पर कोठारी पार्षद दिगंबर भगत की प्रेरणा मार्गदर्शक रुप थी। (शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वे प्राकट्योत्सव के उपलक्ष में निम्न मंदिरो में हुए विविधकार्यक्रम

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच-बापुनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से तथा एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवन की प्रेरणा से बापुनगर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के आयोजन से ता. २४-६-१३ से प्रारंभ करके प्रत्येक शनिवार को रात्रि सभा का आयोजन होता था। जिस में २ सभा एप्रो चमंदिर में, १ सभा कर्मशक्ति मंदिर, १ सभा हर्षद कोलोनी मंदिर, १ सभा विराटनगर मंदिर तथा १ सभा निकोल मंदिर में हुई थी। सभा में धुन, कीर्तन, जनमंगल नामावलि समूह में पाठ तथा एप्रोच मंदिर के संतो द्वारा कथा हुई थी। कर्मशक्ति मंदिर में नारायणघाट मंदिर से महंत पी.पी. स्वामी तथा शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी इत्यादि संत पधारकर धर्मकुल की महिमा का वर्णन किये थे।

४१ बड़ी सभा में २ बड़ी सभा का आयोजन ता. २८-८-१३ रविवार को रात्रि में एप्रोच मंदिर में हुआ था। जिस में कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट मंदिर के महंत पी.पी. स्वामी तथा चैतन्यस्वरुपदासजी इत्यादि संत पधारे थे। धुन-कीर्तन के बाद धर्मकुल की महिमा का वर्णन किया गया था। समाज सेवा के भागरुप में सिविल होस्पिटल के थेलेसशीया के रोगियों के लाभार्थ रक्तदान किया गया था। एप्रोच मंदिर के को. स्वामी की प्रेरणा से हरिभक्तों द्वारा ७३५ वचनामृत के पाठ का नियम लिया गया था। १४१ मिनिट तक धुन की गयी थी। हर्षद कोलोनी के मंदिर में (बहनों के) आधा घंटा तक प्रतिदिन धुन होती है। २११ वृक्षो को लगाया गया था। १४१ से अधिक श्री स्वामिनारायण अंक के आजीवन सदस्य बने थे। ता. ११-८-१३ को समूह महापूजा में २३५ यजमानो ने महापूजा का लाभ लिया था। पूर्णाहुति प्रसंग पर पपू.ध.धु. आचार्य महाराजी संत मंडल के साथ पधारकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। कलात्मक झूले पर ठाकुरजी को झुलाया गया था। जिसका दर्शन करके प.पू .महराजश्री खूब प्रसन्न हुए थे। दिव्य भास्कर न्युज ने कवरेज करके फोटो के साथ प्रिन्ट करके सभी को दिव्य दर्शन का लाभ दिया ता।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा में अखंड धून वृक्षारोपण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वे प्रागट्योत्सव के उपलक्ष में श्रीहरि के प्रसादीभूत श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा में हरिभक्त तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा १४१ मिनट की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन रखी गयी थी। इसके अलांवा अन्य कार्यक्रम भी रखे गये थे। धमासणा गाँव में सेवा की प्रवृत्ति सुंदर होती रहती है। (कोठारीश्री)

डांगरवा गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में श्रीहरि के प्रसादीभूत डांगरवा गाँव में ता. ४-८-१३ को सुंदर सभा का आयोजन किया गया था। जिस में नारायणघाट से स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था। शा.स्वा. चन्द्रप्रकाशदासजी, स्वा. गोपालजीवनदासजी, जसु भगत तथा गणपत भगत पधारे थे। सभा संचालन स्वा. माधवप्रियदासजीने किया था। कलोल (पंटवटी) युवक मंडल द्वारा सुंदर कीर्तन किया गया था। इस प्रसंग पर वडु, आनंदपुरा, टांकीआ, करजीसण, भाऊपुरा, वेंडा इत्यादि गाँव हरिभक्त सभा में लाभ लिये थे। (कोठारीश्री)

चाणस्मा गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में ता. २२-७-१३ को चाणस्मा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में सिध्धपुर गुरुकुल के माधवप्रियदाजी

तथा संत मंडल कथा प्रवचन करके भक्तों को आनंदित किया। इसके साथ उत्तम स्वामी तथा घनश्याम भगत भी पधारे थे।

(को. बाबुभाई)

अधोनिर्दिष्ट गाँवों में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में सभा हुई थी। पालडी, व्यास, देलवाडा, चराडा, कुकरवाडा, आनंदपुरा, गोविंदपुरा, पिलवाई, इत्यादि गाँवों में ४१ समूह महापूजा, यज्ञ के साथ तथा १२१ जनमंगल का पाठ अखंड धून तथा शा.स्वामी कुंजविहारीदासजीने कथा करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया था। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

मोटेरा में १४१ मिनिट की अखंड धुन

प्रसादीभूत मोटेरा गाँव में श्री नरनारायणदेव की असीम कृपासे तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य अगल-बगल के विस्तार में भक्त उपस्थित होकर धुन का लाभ लिये थे। धुन समागम प्रसंग पर चैतन्यस्वरुपदासजी तथा गोपालजीवनदासजीने सभी को आशीर्वचन देकर धुन की समाप्ति की आरती उतारी थी। (समस्त सत्संग समाज मोटेरा)

वलसाडमें १४१ मिनिट की अखंड धुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में ता. १७-८-१३ को श्री नरनारायणदेव महिला मंडल वलसाड द्वारा १४१ मिनिट की अखंड धुन का आयोजन किया गया था। जिस में १५० जितनी बहनोने भाग लिया था। (केशुभाई चौहाण, वलसाड)

माणेकपुरा विलोद्रा तथा भीमपुरा गाँव में भव्य सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में ४१ सत्संग सभा के अन्तर्गत माणेकपुर, बिलोद्रा, भीमपुरा इन तीनों गांवो में अलग-अलग दिन भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। शा.स्वा. पी.पी. स्वामी, धर्मप्रवर्तक स्वामी, स्वा. माधवप्रियदासजी, स्वा. कुंजविहारीदासजी, स्वा. दिव्यप्रकाशदाजी इत्यादि संतो द्वारा तीनो गाँवो में भक्तों को कथा का लाभ मिला था। तीनों गांवो के श्री नरनारायणदेव युवक मडंल के युवानो द्वारा सुंदर कीर्तन-भक्ति का भी आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में करीब ५०० जितने भक्तों ने लाभ लिया था। इस आयोजन में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदाजी)

नांदोल में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में होने वाली ४१ सत्संग सभा के अन्तर्गत नांदोल गाँव में ता. २५-८-१३ को भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में नरोडा के युवकों की सेवा सराहनीय थी। चैतन्यस्वरुपदासजी, स्वामी ऋषिकेशदासजी इत्यादि संतोने सुंदर सत्संग का ज्ञान दिया था। करीब ३५० जितने अगल-बगल के गाँवो से भक्त भाग लेकर सत्संग का लाभ लिये थे। (समस्त सत्संग समाज-नांदोल)

सादरा देश में दोलाराणा वासणा तथा महुन्द्रा गाँव में भव्य सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में गाँव की सत्संग सभा के अन्तर्गत दोलाराणा वासणा में ता. २७-७-१३ को तथा महुन्द्रा में ता. ४-८-१३ को भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा दिव्यप्रकाशदासजी इत्यादि संतो द्वारा कथा का लाभ दिया था। इस कार्यक्रम में २०० जितने हरिभक्त भाग लिये थे। इस आयोजन को नरोडा के युवको ने किया था। (चैतन्यस्वरुपदासजी)

मुबारकपुरा गाँव में भव्य सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य ४१ सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में शा.पी.पी. स्वामी, स्वा. माधवप्रियदासजी, स्वा. धर्मप्रवर्तकदासजी इत्यादि संतोने कथा का लाभ दिया था। इस कार्यक्रम में अगल-बगल के गाँव के हरिभक्त भाग लिये थे। (स्वा. चैतन्यस्वरुपदाजी)

गवाडा गाँव में भव्य सत्संग सभा तथा ४१ समूह महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में ४१ सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, शा.स्वा. कुंजविहारीदासजी, स्वा. ऋषिकेशवप्रसाददासजी इत्यादि संतोने कथा किया था। इस कार्यक्रम में अगल-बगल के गाँवों से २०० जितने भक्त भाग लिये थे। सभीने कथा सुनकर धन्यता का अनुभव किया था। ता. २५-८-१३ को ४१ समूह महापूजा का कार्यक्रम किया गया था। जिस में स्वा. कुंजविहारीदासजीने महापूजा कराई थी। (समस्त सत्संग समाज, गवाडा)

दहेगाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाँव में सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर से. को.जे.के. स्वामी, नारायणमुनिदास,

धर्मप्रवर्तक स्वामी, चैतन्यस्वरुपदासजी तथा ऋषि स्वामी ने भगवान की सर्वोपरिता पर प्रकाश डाला था, इसके साथ ही श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल का माहात्म्य भी समझाया था। बडी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर कीर्तन-भजन-धुन का लाभ लिये थे। (को. हर्षदभाई)

हिंमतनगर श्री नरनारायणदेव महिला मंडल

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्रीकी आज्ञा से हिंमतनगर श्री नरनारायणदेव महिला मंडल द्वारा ज्येष्ठ शुक्ल-१० को श्रीहरि के अन्तर्ध्यान तिथि के निमित्त तिरोधान लीला-कीर्तन एवं कथा का आयोजन किया गया था। तथा आषाढ शुक्ल-१५ को महापूजा का आयोजन किया गया था। जिस में प्रत्येक बहने महाराज की आज्ञानुसार शिक्षापत्री में बताई आज्ञा का पालन करती हैं। प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की प्रसन्नता सभी को मिल रही है। (लाभुबहन पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (श्रीनगर) ३४ वाँ पाटोत्सव तथा कलात्मक झूला

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से, कलोल श्री नरनारायणदेव गादी के श्री स्वामिनारायण मंदिर में कलात्मक झुलोत्सव बनाकर भगवान श्रीहरि को झुलाया गया। मंदिर के जीर्णोध्धार करके सुंदर आरस पहाण का सिंहासन बनाया गया। ता. ३-८-१३ को कलोल के नगरपति श्री महेन्द्रभाई बाबरीया साहब, स्टेन्डींग कमेटी के चेरमेन श्री राजुभाई, उपप्रमुख आदिने दर्शन का लाभ लेकर आरती की। नारायणघाट मंदिर में शा. अभय स्वामीने नगरपति का बहुमान करके आशीर्वाद दिये। (लक्ष्मणभाई जे. पटेल, कलोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा में सावन महिने में चोकलेट, कोन, ड्रायफ्रूट, मोती, राखी आदि भिन्न प्रकार के झुलोत्सव से झुलाया था। चातुर्मास में शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजीने हरिभक्तों को श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ का कथामृतपान करवाया, पवित्र सावन महिने में स.गु.श्री गोपालानंद स्वामी के परचा प्रकरण की कथा कही। कृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। समग्र आयोजन पार्षद हार्दिक भगत, कोठारीश्री तथा गाँव के हरिभक्तों ने मिलकर किया। (पार्षद हार्दिक भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डुमाणा (वढीयार) में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से जेतलपुर के पू. स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से डुमाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में एकादशी को कालीयाणा के प.भ. डाह्याभाई बूटीया आदि भक्तों द्वारा एकादशी की सुंदर सभा आयोजीत की गयी। जिसमें एकादशी माहात्म्य, श्रीहरि लीला चरित्र, धर्मकुल की महिमा का समावेश किया गया। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, डुमाणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी की प्रेरणा से माणसा मंदिर में पवित्र सावन महिने में ड्रायफ्रूट, फुलहार, चोकलेट, राखी, शब्जी-फ्रूट आदि के झूलोत्सव का आयोजन किया गया।

पवित्र सावन मास में मंदिर में सत्संगिभूषण की कथा का आयोजन किया गया। वक्तापद पर चंद्रप्रकाश स्वामी बिराजमान थे। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव धूमधाम से मनाया गया। स.गु. स्वा. जगतप्रकाशदासजीने सर्वोपरी भगवान की माहात्म्य कथा सुनायी। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, माणसा)

बोपल मंदिर में विविधसत्संग की प्रवृत्ति

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव विभाग के अमदावाद के बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर में संतो की उपस्थिति में हरिभक्तों द्वारा विविधसत्संग की प्रवृत्ति चलती है। बालको की प्रत्येक रविवार को सभा होती है। जिस में बहुत सारे बालक भाग लेते हैं।

युवानों के जीवन में उत्तम संस्कार के सिंचन का कार्य हो रहा है। धर्मवल्लभ स्वामी तथा हरिनन्दन स्वामी खूब प्रयत्न शील है। प्रत्येक बुधवार को युवानो की सभा में कथा के माध्यम से नये-नये प्रसंगो का ज्ञान कराया जाता है। धार्मिक परीक्षा भी ली जाती है। हरिभक्तों के जन्म दिन के अवसर पर घनश्याम महाराज श्री नरनारायणदेव की कृपा दर्शनावले प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वादात्मक शुभेच्छा पत्र उनके घरों पर भेजा जाता है। इस तरह यहाँ पर नाना विधप्रवृति चलती है।

(प्रवीणभाई उपाध्याय)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य

महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से श्रावण वद-८ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को भव्य उत्सव मनाया गया था । सर्वप्रथम प.पू. लालजी महाराजश्री जब पधारे तब मूली के संतो द्वारा भव्य स्वागत किया गया था । बाद में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का दर्शन करके सभा में पधारे थे । सभा में मूली देश के सभी संत तथा अग्रगण्य हरिभक्तों द्वारा पूजन किया गया था । श्रावण मास की सुंदर कथा संतो द्वारा की गयी थी । प्रासंगिक सभा में संतो के प्रवचन के बाद प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । रात्रि १२-०० बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती उतारकर प.पू. लालजी महाराजश्री स्वस्थान पधारे थे । बहनों को दर्शन का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी साथ में श्री राजा भी थी । बहनें दर्शन करके दिव्यता का अनुभव की थी । महंत स्वामीने सुंदर व्यवस्था की थी । (को. व्रज स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वांकानेर हिंडोला दर्शन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वांकानेर में स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से संत हरिभक्तों द्वारा आषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ तक ठाकुरजी के समक्ष विविधप्रकार से हिंडोलों को अलंकृत करके उन स्थानों का स्मरण करवाया था । हरिभक्त तथा धर्मप्रेमी आगन्तुक लोग हिंडोले पर विराजमान प्रभु का दर्शन करके आनंदित होते थे । इस सेवा कार्य में स्वामी जयकृष्णदासजी तथा ध्यानी स्वामी के गुरुभाई अ.नि.स्वा. गोपालचरणदासजी के बड़े गुरुभाई के शिष्य मंडल तथा हरिभक्त लगे थे । (शा.सूर्यप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी भक्तवत्सलदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी में श्रीहरि के अन्तर्धान तिथि ज्येष्ठ शुक्ल-१० को भाईयों एवं बहनों के मंदिर में भजन-कथा इत्यादि का आयोजन किया गया था । गुरुपूर्णिमा की सभा में प.पू. महाराजश्री की तस्वीर का पूजन अर्चन किया गया था । आषाढ शुक्ल-११ से श्रावण शुक्ल-११ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा शा.स्वा. वंदनप्रकाशदासजीने किया था । विविधअलंकारो से अलंकृत झूलेपर ठाकुरजी का दर्शन कराया गया था । (को. वन्दनप्रकाशदास)

विदेश सत्संग समाचार

ईटास्का (शिकागो) के भव्य मंदिर में १५ वें पाटोत्सव संपन्न

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से शिकागो इटास्का के श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री घनश्याम महाराज श्री राधाकृष्णदेव, श्री नरनारायणदेव तथा श्री लक्ष्मीनारायणदेव इत्यादि देवों का १५ वाँ पाटोत्सव २७ जुलाई से ४ अगस्त तक समस्त धर्मकुल तथा देश विदेश से पधारे हुए संत हरिभक्तों की उपस्थिति में भव्यातिभव्य ढंग से मनाया गया था ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में स.गु. शतानंद मुनिकृत श्रीमद् सत्संगिजीवन नवान्ह पारायण स्वामी घनस्यामदासजी (माणसा) के वक्तापद पर हुई थी ।

प्रथम दिन पोथीयात्रा के बाद श्री घनश्याम जन्मोत्सव, श्रीहरि का गादी अभिषेक, श्रीहरि कृष्ण महाराज का ५१ फलों के जूस से अभिषेक, राजोपचार पूजन, इत्यादि कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री का जन्मोत्सव केक काटकर मनाया गाय था । बालकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये थे ।

पाटोत्सव अन्तर्गत १५ घंटे तक अखंड धुन, पारायण, श्रीहरियाग, शोभायात्रा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, महापूजा, सुवर्ण रजत तुला, ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक, छप्पन भोग अन्नकूट तथा युवा शिबिर का सुंदर आयोजन किया गया था । समग्र धर्मकुल के सांनिध्य में तथा पूज्य संतो की उपस्थिति में प्रत्येक प्रसंग भव्यता से मनाया गया था ।

शोभायात्रा में संत हरिभक्त विशाल संख्या में जुडे थे । श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों द्वारा शालीग्राम की तुलाविधिका दर्शन करके धन्य हो गये । सुवर्ण रजत के डोनेटरों को प्रसादी की वस्तुयें भेंट में दी गयी थी । श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों द्वारा ठाकुरजी का महाभिषेक किया गया था । बाद छप्पन भोग लगाकर अन्नकूट की आरती की गयी थी । बहनों की धर्मगुरु लक्ष्मीस्वरुपा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी के अमृतवाणी का बहनों को लाभ मिला था। पू. श्रीराजा, पू. बिन्दुराजातथा चि. श्री सौम्यकुमार, चि. श्री सुव्रतकुमार भी सभी को आनंद प्रदान किये थए ।

अमेरिका की धरती पर श्री नरनारायणदेव देश विभाग के शिकागो इटास्का श्री स्वामिनारायण मदंरि के इतिहास में

सुवर्णाक्षरों में लिखा जायेगा । यहाँ पर प्रथम शिखरी मंदिर बना । सर्व प्रथम नवान्ह पारायण हुआ । सर्व प्रथम श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा शालिग्राम भगवान की सुवर्ण रजत तुला विधिहुई थी । सर्व प्रथम सभा मंडल में धर्मकुल तथा संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में लालजी महाराजश्री का प्राकट्योत्सव मनाया गया था ।

प्रासंगिक सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज यदि आनंद हुआ है तो सबसे अधिक हमें हुआ है । शिकागो में वरसते पानी में रात्रि के २ बजे तक हरिभक्तों के धरों में पदार्पण कार्य चलता रहा ।

प.पू. लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि श्री नरनारायणदेव कल्पवृक्ष हैं । उनके पास (नीचे) बैठने से संकल्प सिद्धि होती है । उनके आश्रय से मोक्ष मिलता है ।

अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद देते हुए कहे कि ''मनुष्य भटक रहा है, घर बैठे भगवान दिखाई नहीं देते । हमें मिला यह सत्संग, शास्त्र, संत, हरिभक्त महाराजश्री कृपा से है । अहो भाव रखने की महाराजने की है । संत तो हमारे मूली है

धर्मकुल के आशीर्वाद तथा प्रसन्नता से आज सत्संग खूब दृढ हुआ है ।

समग्र सभा का संचालन स्वा. व्रजवल्लभदासजीने किया था । भारत से पधारे हुए संत पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) पू. शा. पूर्णप्रकाशदासजी (धोलका) श्री नरनारायणदेव के पुजारी राजेश्वरानंदजी, पू. देव स्वामी (नारायणघाट), पू. राम स्वामी (कोटेश्वर) शिकागो मंदिर के पुजारी पू. जे.पी. स्वामी, पू. शांति स्वामी, पू. विश्वविहारीदासजी, पू. शा. व्रजवल्लभदासजी, शा. घनश्याम स्वामी (कथा के वक्ता) तथा अन्य चेप्टरों से पधारे हुए संत एवं पार्षद वनराज भगत, श्री कनु भगत, श्री शैलेष भगत, देश विदेश से पधारे हुए हरिभक्तों को शिकागो मंदिर के हरिभगत आभार मानते हैं । पाटोत्सव के प्रत्येक प्रसंग के यजमान तथा प्रत्येक कार्य में सेवा करने वाले सभी का आभार मानते हैं । उत्सव के बाद प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में युवा केम्प का आयोजन किया गया था । (स्वा. विश्वविहारीदासजी तथा वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में सत्संग

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में ८ जून सायंकाल ५ से ८ तक महंत स्वा. धर्मकिशोरदासजी तथा स्वा. नरनारायणदासजी की प्रेरणा से यहाँ के युवकों द्वारा सत्संग का आयोजन किया गया था । संतो ने श्रीहरि की लीला चरित्र का सुंदर वर्णन किया था । अंत में समूह में जनमंगल पाठ, संध्या आरती तथा महाप्रसाद लेकर सभा विसर्जित हुई थी । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन का २६ वां पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में १ जून शनिवार को ठाकुरजी का २६ वाँ पाटोत्सव विधिपूर्वक मनाया गया था । इस प्रसंग पर बोस्टन से पधारे हुए महंत स्वा. माधवप्रसाददासजी चेरीहील से स्वा. सिद्धेश्वरदासजी, कोलोनिया से धर्मकिशोरदासजी, शा.स्वा. नारायणदासजी, विहोकन मंदिर से घनश्यामदासजी की शुभ उपस्थिति में ठाकुरजी का अभिषेक तथा आरती की गयी थी । मुख्य यजमानश्री विपुलभाई शाहने (न्युयोर्क) भगवान की पूजा विधितथा अभिषेक का लाभ लिया था । संतो ने सुंदर कथा प्रवचन किया था । बोस्टन से हरिभक्तों द्वारा लाये गये कलश का संतो ने पूजन किया था । इस प्रसंग पर यहाँ के मेयर पधारे हुए थे, जिनका पुष्पहार से स्वागत किया गया था

(प्रवीण शाह)

फ्लोरिडा श्री स्वामिनारायण मंदिर का ८ वाँ पाटोत्सव सुवर्ण कलश प्रतिष्ठा महोत्सव

फ्लोरिडा लेकलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में (आई.एस.एस.ओ.) में विराजमान श्री घनस्याम महाराज, श्री राधाकृष्ण देव, श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव का आठवां वार्षिक पाटोत्सव तथा शिखरी मंदिर की कलश प्रतिष्ठा महोत्सव २०-८-१३ से २४-८-१३ तक श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हुई थी ।

इस अवसर पर महंत स्वामी विवेकसागरदासजी, स्वा. विजयप्रकाशदासजी तथा प्रेसीडेन्ट श्री नलिनभाई के. पटेल तथा कमेटी के सदस्यों द्वारा मंदिर को अलंकृत किया गया था ।

इस प्रसंग पर ता. २०-८-१३ से ता. २४-८-१३ तक विदुरनीति का पन्चान्ह पारायण शा. नारायणवल्लभदासजी के वक्तांपद पर किया गया था । एक दिवसीय महारुद्र यज्ञ को भी संपन्न किया गया था ।

ता. २२-८-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ सायंकाल ५-०० बजे पधारे थे । उस समय हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया गया था ।

सायंकाल ठाकुरजी की आरती के बाद सभी हरिभक्तों को दर्शन का दिव्य लाभ दिया था । ता. २३-८-१३ को प.पू.

महाराजश्रीने यज्ञ की पूर्णाहुति की थी । ता. २४-८-१३ को प्रातः ८-०० बजे मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी का महाभिषेक प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों संपन्न हुआ था । जिसका दर्शन करके हरिभक्त धन्य हो गये थे । बाद में मंदिर के शिखर पर सुवर्ण कलश तथा ध्वजदंड की प्रतिष्ठा की गई थी । बाद में प.पू. महाराजश्री सभा में पधारकर पूर्णाहुति की आरती किये थे । हरिभक्त शिस्तबद्ध महाराजश्री के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे । इस प्रसंग पर पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), घनश्याम स्वामी (माणसा) ने प्रेरक प्रवचन किये थे । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी हरिभक्तों को नियम, निश्चय, पक्ष, आज्ञा, उपासना, इत्यादि दृढता से करने की आज्ञा की थी । सभी को प्रतिदिन मंदिर में आने के लिये आज्ञा किये थे ।

इस प्रसंग पर स्वा. नारायणवल्लभदासजी, शास्त्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, घनश्यामप्रकाशदासजी, शा. घनश्यामदासजी, स्वा. श्री वल्लभदासजी, पार्षद वनराज भगत, पार्षद नरेन्द्र भगत इत्यादि संत-पार्षद पधारे थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती उतारकर हरिभक्तों को दर्शन का लाभ दिया था । ता. २४-८-१३ रात्रि में बालकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था । समग्र प्रसंग का संचालन शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा स्वामी विजयप्रकाशदासजीने किया था । आभार विधिप्रेसि. श्री नलिनभाईने किया था । भोजनालय की सम्पूर्ण व्यवस्था महिलाओं ने की थी । (शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर यु.के. का ९ वाँ पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से लेस्टर के मंदिर में बिराजमान श्रीहरिकृष्ण महाराज श्री राधाकृष्णदेव का ९वाँ पाटोत्सव पू. संतोकी उपस्थिति में ता. १३-८-१३ से ता. १८-८-१३ तक धूमधाम से मनाया गया था ।

इस उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण पू. स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर हुआ था । हजारों हरिभक्त इस दिव्य कथा में आनेवाले सभी प्रसंग का दिव्यता के साथ आनंद लिये थे । कथा के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किया गया था ।

ता. १५-८-१३ को प्रातः ८-३० बजे स्वा. निर्गुणदासजी, स्वा. विष्णुप्रसाददासजीने ठाकुरजी का महाभिषेक किया था । प.भ. तरुणभाई एफ. ने यजमान पद का लाभ लिया था ।

दोपहर में ठाकुरजी को भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया था । इस प्रसंग पर अगल-बगल के शहर से बड़ी संख्या में हरिभक्त कथाश्रवण का लाभ लिये थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है ।

(किरण भावसार)

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

अमदावाद : श्री स्वामिनारायण मंदिर के स.गु.ब्र. स्वा. वयोवृद्ध संतोषानंदजी ता. १४-८-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है । साणंद के हरिभक्तों ने अन्तिम समय में खूब सेवा की थी ।

शिरोही (राजस्थान) : राजस्थान शिरोही श्री स्वामिनारायण मंदिर के पूर्व कोठारी तथा पुजारी प.भ. सोनी हिमताजी समर्थाजी सुथार श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है, जो ७५ वर्ष की उम्र के थे । संप्रदाय की उत्तम सेवा की थी । भगवान उन्हें अपने अक्षरधाम में सेवा का स्थान प्रदान करें । इन्होंने सत्संग की ७५ वर्ष तक की अविरत सेवा की थी । शिरोही के सत्संग समाज में हिमताजी का पूर्ण पोषण मिला है । सत्संग के खूब आग्रही थे । जो भी भक्त मंदिर आते उन्हें आग्रहपूर्वक दर्शन के लिए कहते । लाख-लाख साधुवाद ।

गोलाणा : प.भ. परमार प्रभातसंग अदेसंग ता. २५-७-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अमदावाद-मेघाणीनगर : प.भ. विष्णुभाई कचराभाई (उम्र ५२ वर्ष) ता. २-८-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं । वे पटेल जीवणभाई के छोटे भाई थे ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

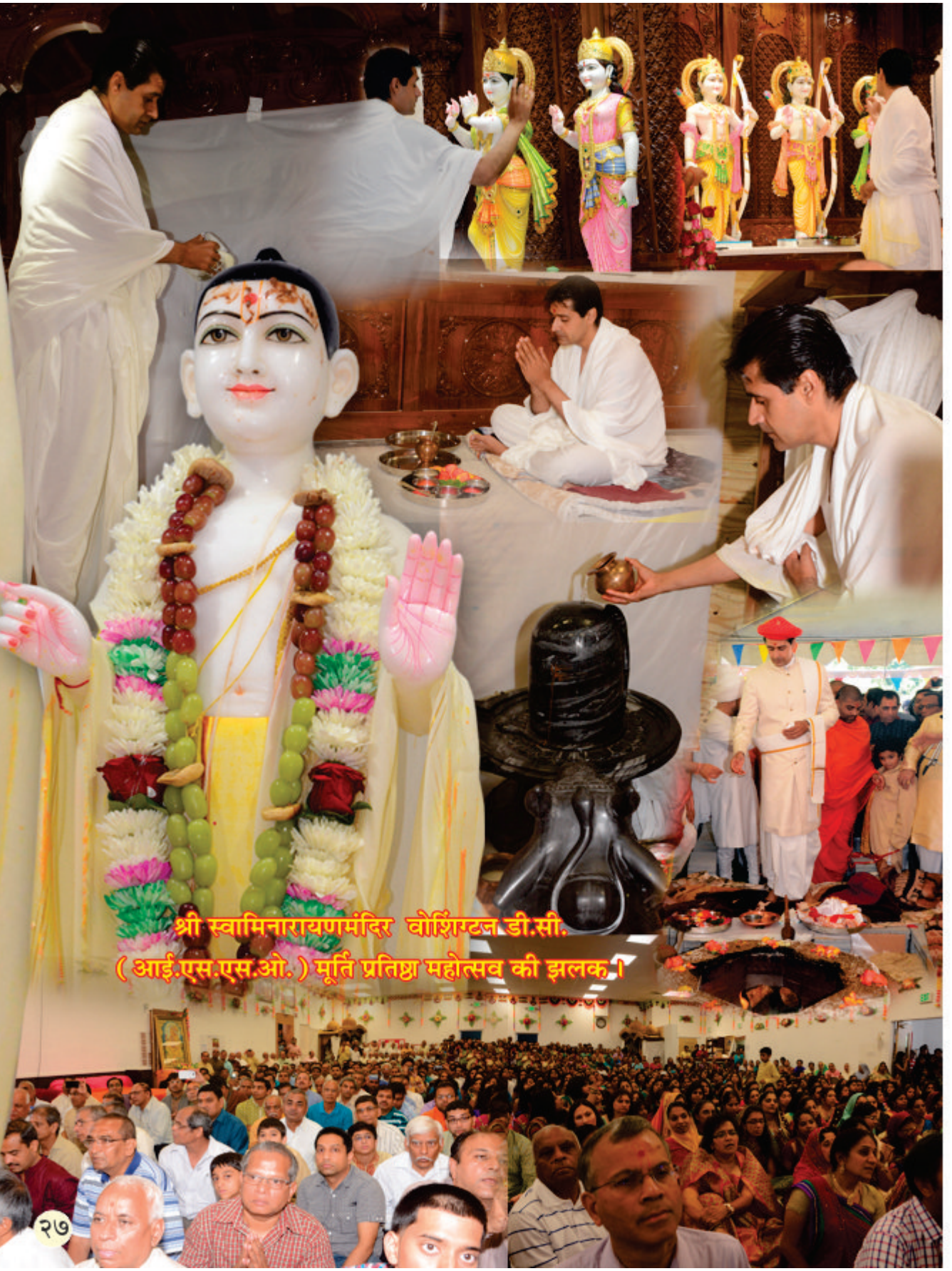

श्री स्वामिनारायणमंदिर वॉशिंग्टन डी.सी.
(आई.एस.एस.ओ.) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव की झलक।

श्री स्वामिनारायणमंदिर वॉशिंग्टन डी.सी. (आई.एस.एस.ओ.) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव की झलक ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के आगामी ४१ वे जन्मोत्सव (दशेरा) के अवसर पर विविध गांव - मंदिरोमें कार्यक्रम

(१) मूली मंदिर में जन्माष्टमी प्रसंग पर आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । (२) घाटलोडीया मंदिर में सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।(३) श्रावण शुक्ल-पूनम को जेतलपुर पदयात्रा द्वारा दर्शन के लिए पधारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।(४) विजापुर में सभा को संबोधित करते हुए शा. पी.पी. स्वामी (नाराणघाट) ।(५) दहेगाँव मंदिर में सत्संग सभा में लाभ देते हुए जे.के. स्वामी, मुनि स्वामी, धर्मप्रवर्तक स्वामी, शा. चैतन्य स्वामी तथा ऋषि स्वामी ।(६) डांगरवा में सत्संग सभा में लाभ देते हुए शा. चैतन्य स्वामी तथा चन्द्रप्रकाश स्वामी ।(७) खोखरा मंदिर में सत्संग सभा में लाभ देते हुए संत मंडल ।(८) नांदोल गाँव में मंदिर में संतो की उपस्थिति में सत्संग सभा ।(९) कलोल (श्रीनगर सोसा.) मंदिर में कलात्मक झूले का दर्शन ।(१०) जीवराजपार्क मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव ।(११) मोटेरा गाँव में संतो की उपस्थिति में सत्संग सभा ।(१२) वलसाड में १४१ मिनिट की अखंड धून में लाभ लेती हुई बहने ।(१३) विहार गाँव में मंदिर में महापूजा का लाभ लेते हुए हरिभक्त ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

शिकागो (अमेरिका) मंदिर के १५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर समग्र धर्मकुल की उपस्थिति में विविध प्रसंगो की झलक.

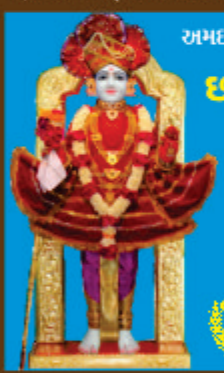

અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણ દેવ ગાદીના પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી

છપૈયાધામ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર પારસીપની (ન્યુજર્સી)નો

મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

તા.૧૨-૧૦-૨૦૧૩ થી તા.૧૯-૧૦-૨૦૧૩

Shree Swaminarayan Temple (I S S O)

1699 US RT # 46 EAST, PARSIPPANY, NJ 07054 Temple Phone : 973 - 402 -1008

શ્રી નરનારાયણદેવ દેશના પીઠાધિપતિ, ધર્મમાર્તંડ

પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનો

૪૧ મો જન્મોત્સવ

તા. ૧૩-૧૦-૨૦૧૩ રવિવાર (દશેરા) ના દિને સાંજે ૪:૩૦ કલાકે

સ્થળઃ ગાંધીનગર

આયોજકઃ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - નારણઘાટ

તથા શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળ અને સમગ્ર સત્સંગ સમાજ અમદાવાદ વતી

સ.ગુ.દેવપ્રકાશ સ્વામી તથા સ.ગુ.શા.પી.પી.સ્વામી (મહંતશ્રી - નારણઘાટ)

Jagdish Offset

Praful Kharsani